मई-२०२३ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मई-२०२३

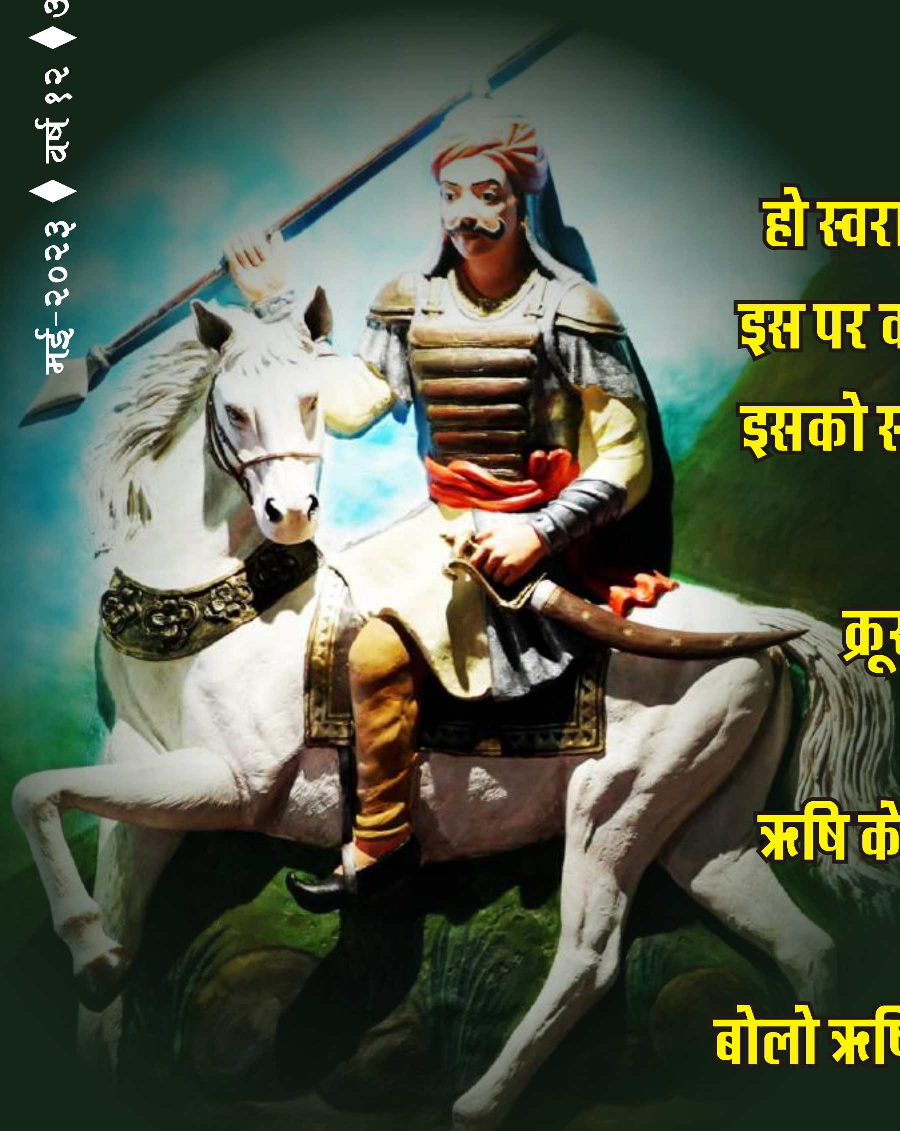

हो स्वराज्य का पूजन अर्चन,
इस पर वारें हम तन-मन-धन।
इसको सब कुछ अर्पण करने,
होवें हम तैयार।
क्रूर विदेशी सत्ता हमको,
कभी नहीं स्वीकार।
ऋषि के हर लेखन में हमको,
दिखता बारम्बार।
बोलो ऋषि की जय-जयकार।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १३६

हर समय स्वाद ही स्वाद
MDH मसाले
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
GARAM MASALA
गरम मसाला
SAMBHAR MASALA
साम्बर मसाला
CHANA MASALA
चना मसाला
KITCHEN KING
किचन किंग
SHAHI PANEER MASALA
शाही पनीर मसाला
KASHMIRI MIRCH
CHUNKY CHAT MASALA
RAJMAH MASALA
राजमा मसाला
SABZI MASALA
सब्जी मसाला
DEGGI MIRCH
PEACOCK KASOORI METHI
PAV BHAJI MASALA
पाव भाजी मसाला
VEG BIRYANI MASALA
वैज बिरयानी मसाला
KARAHI PANEER MASALA
कढ़ाही पनीर मसाला
JAL JEERA MASALA
जल जीरा मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक
भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२४
ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया
विक्रम संवत्
२०८०
दयानन्दाब्द
१९९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

May - 2023

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन	5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २८
हलचल २९

०४ वेद सुधा
०६ सत्यार्थ मित्र बनें
१६ रोज करो श्राद्ध और तर्पण
१९ प्रचण्ड समर्पण-अखण्ड प्रवाह
२२ गंगा अशुद्ध हो गई है
२३ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२३
२४ स्वास्थ्य- ग्रीष्म ऋतु आहार-विहार
२६ कथा सरित- कहानी दयानन्द की
२८ कथा सरित
३० सत्यार्थ पीयूष- वेद मनुष्यमात्र ...

स्वामी: श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १२ अंक -०१

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

गागर में सागर

प्राचीनतम ईश्वरीय ज्ञान को वेद कहा गया है। वेदों के प्रत्येक मन्त्र में गागर में सागर भरा हुआ है। आधुनिक भौतिकता की दौड़ में आज हमने धन-सम्पत्ति, वैभव को ही जीवन की सफलता और सुख का साधन मान लिया है। किन्तु यह धन कैसा हो? जिस धन को पाने के लिए हम उद्योग-व्यापार या कोई भी काम शुरू करें तो धन के साथ ईश्वर से किस-किस प्रकार की सहायता चाहते हैं? वेद हमें इसका भी ज्ञान देता है। ऋग्वेद का यह सारगर्भित मन्त्र किस प्रकार हमारा मार्गदर्शन कर रहा है -

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।। - ऋग्वेद २/२१/६

अर्थात्- हे अखिल ऐश्वर्य सम्पन्न परमेश्वर! हमें श्रेष्ठ धनों को दे। उत्साह, चतुरता और सत्कर्म के ज्ञान को दे, सौभाग्य को धनों की पुष्टि को, शरीर की निरोगिता को, मधुर वाणी को और अच्छे दिनों को दे।

अब ध्यान से इस मन्त्र को समझें तो काम की सफलता के लिए आवश्यक सभी श्रेष्ठ पदार्थों की प्रार्थना ईश्वर से कर ली गई है। सबसे पहले हमने कहा-

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि। हे ऐश्वर्य के इन्द्र देवता! हमें श्रेष्ठ धन दे, गलत तरीके से, कुकर्म से, किसी की हानि या दुःख देकर लिया हुआ धन न दे। श्रेष्ठ धन, न्याय और सत्कर्म द्वारा प्राप्त धन दे।

दूसरा दक्षस्य चित्तिम्= उत्साह, चातुर्य और सत्कर्म का ज्ञान। जीवन में सफलता पाने के लिए पहले कर्तव्य कर्म का ज्ञान होना चाहिए और उस कर्तव्य को करने के लिए उत्साह और चतुराई भी होनी चाहिए, केवल मात्र कर्म करने से ही सफलता नहीं मिलती। व्यापार के लिए यह जरूरी है कि आप उसमें इस तरह जुड़ जाएँ कि आपको उसमें खुशी मिले और आप अपने रचनात्मक गुणों का उपभोग कर सकें।

तीसरा सुभगत्वम्= सौभाग्यम्। सारे साधन हों और भाग्य अच्छा न हो तो अनेक रूकावटें आती हैं। यहाँ सौभाग्य और दुर्भाग्य का मिलना भी मनुष्य के ही हाथ में है, उसके कर्मों के आधीन है। इसे इस तरह समझना होगा कि पहले कहा गया था कि **दक्षस्य चित्तिम्=** चतुराई से, बुद्धिमानी से किया गया काम होगा तो उस काम में सफलता मिलेगी, भाग्य कर्मानुसार बनेगा। पिछले कर्मों के फलों को बदला नहीं जा सकता उसमें परिवर्तन नहीं हो सकता क्योंकि अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा फल तो मिलता ही है अतः आगे भाग्य अच्छा बने इसलिए ठीक दिशा में किया हुआ कर्म, पुरुषार्थ से सौभाग्य ही प्राप्त होगा। इस तरह सौभाग्य माँगा गया है।

तत्पश्चात् **पोषं रयीणाम्=** धन की पूर्ति या पुष्टि। व्यवसाय में सांसारिक जीवन में धन की प्रचुर मात्रा में आवश्यकता होती है। धन के बिना या कम धन से किसी भी काम को पूरा नहीं किया जा सकता। वेद में प्रार्थना है- **वयं स्याम पतयो रयीणाम्=** हम धनों के स्वामी बनें। कर्म, पुरुषार्थ और भाग्य के साथ बहुत सारा धन भी चाहिए तभी कार्य, व्यवसाय सफल हो पाते हैं।

इसके बाद कहा है- **अरिष्टिं तनूनाम्=** हमारा शरीर स्वस्थ्य और निरोगी रहे, बलवान रहे। वेद में कहा है- **अश्मा भवतु नस्तनु=** हमारा शरीर वज्र के समान बलिष्ठ हो। अब आप देखिए कि इस एक मंत्र में प्रभु से हमने श्रेष्ठ धन के साथ उत्कृष्ट बुद्धि और फिर सौभाग्य की प्रार्थना की, इसके बाद कार्यों को निर्विघ्न पूरा

करने के लिए पर्याप्त धन (working capital) की कमी न हो। वे सब श्रेष्ठ धन, उत्कृष्ट बुद्धि, सौभाग्य और बहुत सारा धन भी हो और शरीर स्वस्थ्य न हो तो क्या होगा? हम कुछ नहीं कर पायेंगे।

आगे फिर शरीर भी स्वस्थ है और वाणी में मधुरता नहीं है तो बने बनाए काम बिगड़ जाएँगे। इसलिए कहा- **स्वाद्मानं वाचः**= वाणी मधुर हो। मधुर और सोच-समझ कर बोलने वाले ही अपने कार्य-व्यापार या जीवन में सफल हो पाते हैं अन्यथा सभी कुछ गंवा देते हैं। किसी कवि ने कहा है-

कुदरत को नापसन्द है सख्ती बयान में,
इसलिये नहीं लगाई हड्डी जबान में।

सन्त कबीर ने कहा - **बोली जो अनमोल है, जो कोई जानै बोल, हिये तराजू तोलिके, तब मुख बाहर खोल।**

अर्थात्- वाणी बहुत अनमोल होती है, उसे बहुत सोच-समझ कर ही बोलना चाहिये।

और अन्त में कहा है- **सुदिनत्वमह्नाम्**= हे ईश्वर! हमारा दिन अच्छा बीते। हमारे दिन सुदिन हों।

इस तरह सम्पूर्ण प्रार्थना करने के बाद भक्त नन्हे बालक की तरह मचल कर अपनी बात, अपनी इच्छाओं को तुरन्त पूरा करवाना चाहता है और पुनः कहता है-

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी, हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके।

अर्थात्- हे वरण करने योग्य प्रभु! आप मेरी इस प्रार्थना को सुनिये और आज ही मुझे सब सुखों से परिपूर्ण कर दीजिये। मैं अपने सब गुण-कर्म-स्वभाव से आपको हर प्रकार से प्रसन्न करना चाहता हूँ और आपका अभिलाषी होकर स्तुति करता हूँ।

परमात्मा भी अपने भक्तों की करुण, पवित्र प्रार्थना को सुनता ही नहीं है अपितु उसे पूरा करने के लिए दौड़ा चला आता है-

ओ३म् तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्॥

जब भक्त **अ उ म्** अर्थात् **ओ३म्** की वाणी हृदय से पुकारता है तो अपने भक्तों के दुःखों को दूर करने के लिए ईश्वर उसी तरह दौड़ा चला आता है जिस तरह सायंकाल में अपने भूखे बछड़ों की पुकार सुनकर दूध से भरी हुई गायें दौड़ी चली आती हैं। वेद के प्रत्येक मन्त्र में मानों गागर में सागर भरा हुआ है। हम इन्हे समझें और अपनी प्राचीन अकूत सम्पदा को पुनः प्रतिष्ठित करें-

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में-

आओ बनें शुभ साधना के आज से साधक सभी,
धर्म की रक्षा करें, जीवन सफल होगा तभी।
संसार अब देखे कि यदि हम आज हैं पिछड़े हुए,
तो कल बराबर और परसों विश्व में आगे खड़े।

लेखिका- डॉ. रोचना सुभाषचन्द्र भारती
साभार- अमृत मन्थन

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है।

यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर
बैंक एकाउन्ट का विवरण :
AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001
में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

श्री प्रेमनाथ कौशल
कोटा

श्री ओमप्रकाश आर्य
ढाका (बिहार)

श्री सूरत सिंह
कोटा

श्री नित्येन्द्र सिंह पाल
कोटा

श्री पूर्णचन्द्र मित्तल
कोटा

श्री प्रमोद कुमार गुप्ता
कोटा

श्री हरिदत्त शर्मा
कोटा

श्री जगदीश चन्द्र आर्य
कोटा

औपचारिक शिक्षा और विद्वता

आजकल एक हंगामा मचा हुआ है और एक राजनीतिज्ञ का कहना है कि आज के जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी हैं वे अनपढ़ हैं। इसका खामियाजा देश को भुगतना पड़ रहा है। केजरीवाल जी की यह इतनी हास्यास्पद अवधारणा है कि इस पर कोई गम्भीर विचार यद्यपि करने की आवश्यकता नहीं है परन्तु फिर भी हमें यह समझ लेने में कोई आपत्ति नहीं है कि औपचारिक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत डिग्री प्राप्त कर लेना एक अलग बात है और विद्वता एक अलग बात है। हम एक स्थानीय विद्यालय की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष के रूप में जब थे तब हमारी उक्त विचारधारा एक बार नहीं अनेक बार सत्य सिद्ध हुई। अध्यापकों की नियुक्ति के लिए जो लोग एम.ए. संस्कृत थे उनको हमने जब गायत्री मंत्र लिखने के लिए कहा तो उसमें दसियों अशुद्धियाँ थी, अर्थ की तो खैर बात जाने ही दीजिए। क्या राजनीति विज्ञान से स्नातकोत्तर अथवा पीएचडी करने वाले हर व्यक्ति से यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह कुशल राजनीतिज्ञ होगा? सभी का उत्तर नकारात्मक होगा।

तो हमारे विचार में देश के शासक का विद्वान् होना तो जरूरी है परन्तु उसके पास कोई लम्बी-चौड़ी डिग्री हो यह आवश्यक नहीं।

इस विवाद का जहाँ तक यह पहलू है कि केजरीवाल जी ने आरटीआई एक्ट के माध्यम से प्रधानमंत्री जी की शिक्षा की डिग्रियों के बाबत् जब आवेदन किया तो गुजरात हाईकोर्ट ने उनको फटकार लगाते हुए सूचना आयोग के निर्देश को रद्द करते हुए केजरीवाल जी के ऊपर ₹25000 का जुर्माना लगा दिया। हमारे विचार में हाईकोर्ट ने बिल्कुल सही किया। आरटीआई एक्ट इसलिए नहीं बना कि जब आपकी जो मर्जी हो बिना किसी उद्देश्य के आप वह माँग करते रहें।

उधर आजकल जेल में प्रवास कर रहे श्री मनीष सिसोदिया ने भी पत्र लिखकर ऐसा ही आशय प्रकट किया है। प्रधानमंत्री जी के निर्वाचन के ९ वर्ष बाद यह विषय अचानक इतना महत्वपूर्ण उनके लिए हो गया कि उन्होंने जेल से बाहर आने तक का भी इंतजार नहीं किया और उन्होंने तुरन्त पत्र लिखा। उनका विचार है कि अन्य देशों के सामने सर्वोपरि पद पर विराजमान व्यक्ति का अनपढ़ होना शर्मिंदगी का कारण बन जाता है।

सिसोदिया का मानना है चूँकि देश के पीएम कम पढ़े-लिखे हैं इसलिए दुनिया के राष्ट्राध्यक्ष उनको गले लगाकर न जाने कितने कागजों पर साइन करवा लेते हैं क्योंकि प्रधानमंत्री जी तो समझ ही नहीं पाते क्योंकि वो तो कम

पढ़े-लिखे हैं।

प्रधानमंत्री जो हर मोर्चे पर नए इनोवेशन कर रहे हैं, विश्व भर में उनकी एप्रूवल रेटिंग सबसे ऊँची है, उनके बारे में यह कहना कि जब विदेशी राष्ट्राध्यक्ष आपसी समझौता करते हैं तो किन्हीं भी पेपर पर हस्ताक्षर कर देते हैं क्योंकि अनपढ़ होने के कारण उसमें लिखी सामग्री उनके समझ नहीं आती। इस बात पर राजनीति को बीच से हटा दिया जाए तो मोदी के कट्टर विरोधी को भी हँसी आएगी। अब झूँठ का बाजार और भी गर्म हो गया।

AICC, सोशल मीडिया एण्ड डिजिटल कम्युनिकेशन्स नाम के फेसबुक पेज पर शेयर करते हुए लिखा है, 'फोर्ब्स के अनुसार भारत में सबसे शिक्षित नेताओं में राहुल गाँधी ७वें स्थान पर हैं और मोदी जी १००वें स्थान में भी नहीं!'

सचाई यह है कि फोर्ब्स लिस्ट तो जारी करता है, परन्तु विश्व के ताकतवर नेताओं की न कि पढ़े-लिखे नेताओं की। स्पष्ट है जो दावा किया जा रहा है, वो झूठा और फर्जी है।

प्रधानमंत्री जी की डिग्री एक प्रसिद्ध न्यूज चैनल के अनुसार दिल्ली यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर उपलब्ध है। आज के सूचना तंत्र के युग में जब सब कुछ ऑनलाइन उपलब्ध है उस समय यह माँग सिर्फ नाटक प्रतीत होती है। और फिर दूसरी बात अगर प्रधानमंत्री जी के पास डिग्री न भी हो तो भी न तो उनको डिग्री के अभाव में प्रधानमंत्री पद के लिए अयोग्य ठहराया जा सकता है और न हीं उन्हें अनपढ़ कहा जा सकता है। तो जैसा हमने कहा शासक को विद्वान् अवश्य होना चाहिए, चतुर होना चाहिए, कुशल होना चाहिए, धर्मात्मा होना चाहिए, प्रजावत्सल होना चाहिए, पक्षपात रहित होना चाहिए, न्यायप्रिय होना चाहिए भले ही उसके पास बीए, एमए, आई आईटी अथवा आई आई एम की डिग्री ना हो।

राजा अथवा शासक विद्वान् होना चाहिए इस आवश्यकता को रेखांकित करते हुए महर्षि मनु लिखते हैं-

जैसा परम विद्वान् ब्राह्मण होता है वैसा विद्वान् सुशिक्षित होकर क्षत्रिय को योग्य है कि इस सब राज्य की रक्षा यथावत् करे।

यहाँ स्पष्ट कथन है कि शासक का भी विद्वान् होना आवश्यक है तभी वह सारी व्यवस्थाओं को समझ सकेगा।

राजा जिसे आज के समय में प्रधानमंत्री भारत के सन्दर्भ में माना जा सकता है उसमें क्या-क्या योग्यताएँ होनी चाहिए, यह बात यजुर्वेद के मंत्र में में कही है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने कालजयी ग्रन्थ रत्न सत्यार्थ प्रकाश में इसका उल्लेख करते हुए इसका अर्थ भी किया है।

इमं देवाऽअसपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। - यजुर्वेद ९/४०

हे (देवाः) विद्वानों राजप्रजाजनों तुम (इमम्) इस प्रकार के पुरुष को (महते क्षत्राय) बड़े चक्रवर्ती राज्य (महते ज्यैष्ठ्याय) सब से बड़े होने (महते जानराज्याय) बड़े-बड़े विद्वानों से युक्त राज्य पालने और (इन्द्रस्येन्द्रियाय) परम ऐश्वर्ययुक्त राज्य और धन के पालन के लिये (असपत्नं सुवध्वम्) सम्मति करके सर्वत्र पक्षपातरहित पूर्ण विद्या विनययुक्त सब के मित्र सभापति राजा को सर्वाधीश मान के सब भूगोल शत्रुरहित करो।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि वैदिक संस्कृति में राजा वंशानुगत हो ऐसी कोई धारणा नहीं मिलती।

उक्त मंत्र में भी यही आदेश है कि सम्मति करके राजा को चुना जाए। वेद में एकतंत्र शासन की अनुमति नहीं है। वेद के राजा पद को आज के राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री अथवा ऐसे ही किसी समकक्ष के रूप में लिया जाना चाहिए।

राजा कैसा हो ?

पहला- पक्षपात रहित हो। वेद मंत्र में सबसे पहली योग्यता ही पक्षपातरहितता को माना है। यद्यपि महर्षि दयानन्द जी महाराज तो मनुष्यता की भी पहचान इसको मानते हैं कि मनुष्य वही है जो पक्षपात रहित है। यहाँ राजा की बात हो रही है अतः उस से विशेष अपेक्षाएँ हैं। वह लेशमात्र भी प्रजा के सम्बन्ध में पक्षपात न करे। सबको उन्नति का समान अवसर मिलना चाहिए, सबके लिए समृद्धि का समान प्रयत्न करना चाहिए, सबके जीवन, प्रतिष्ठा और सम्पत्ति की एक समान रूप से सुरक्षा होनी चाहिए। क्या कोई कह सकता है कि राजा में यह गुण न हो?

दूसरा गुण पूर्ण विद्यायुक्त होना है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शासक अपने समकक्षों में सर्वाधिक योग्य हो। यद्यपि आज जनतंत्र का जो स्वरूप देश में ही क्या विश्व भर में प्रचलित है, उसमें योग्यता का कोई स्थान नहीं है। केवल जनमत की अधिकता उसमें कारक है। वेद में जो उक्त गुण बताए हैं वे जिनमें बिल्कुल ना हो परन्तु वह ज्यादा वोट पाने में किन्हीं भी कारणों से सफल हो जाता है, तो वही शासक होगा। यह आज के युग की विडम्बना है।

खैर यहाँ बात विद्वता की है तो इसमें कोई सन्देह नहीं शासक का विद्वान् होना अत्यावश्यक है। परन्तु यह बात रेखांकित करके यही कहेंगे कि औपचारिक शिक्षा विद्वता की गारण्टी है ऐसा बिल्कुल नहीं कहा जा सकता। प्राचीन भारतीय मनीषा ने इसीलिए स्वाध्याय को सर्वाधिक महत्व दिया।

स्वाध्यायान्मा प्रमदः निर्देश इसीलिए है कि कोई पारंपरिक औपचारिक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करने से किसी प्रकार वंचित रह जाए तो स्वाध्याय वह साधन है जिसका अवलम्बन कर वह विद्वानों में शिरोमणि स्थान प्राप्त कर सकता है।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ समुल्लासों के ऊपर प्रति समुल्लास निबन्ध प्रतियोगिताएँ आयोजित की थीं। आज आर्य समाज में जिनको स्थापित लेखिका का स्थान प्राप्त हुआ है वह (स्मृतिशेष) श्रीमती सरोज वर्मा केवल और केवल स्वाध्याय के बल पर ऐसी विदुषी बन गईं जिन्होंने इनमें से कई प्रतियोगिताओं में न केवल प्रथम स्थान प्राप्त किया परन्तु इससे अलग हटकर उन्होंने अत्यन्त महत्वपूर्ण और सारगर्भित पुस्तकों का लेखन किया। स्पष्ट है विद्वता के लिए औपचारिक शिक्षा प्रणाली आवश्यक नहीं है।

इतिहास भी इस तथ्य को प्रश्रय नहीं देता कि जो औपचारिक शिक्षा प्रणाली से न पढ़ा हो वह विद्वान् नहीं हो

सकता।

यहाँ विद्वान् के लक्षण भी जान लें

विद्वान् नाम उसका है जो अर्थसहित विद्या को पढ़के वैसा ही आचरण करे, कि जिससे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष और परमेश्वर की प्राप्ति यथावत् हो सके। इसी को 'स्थिरपीत' कहते हैं। ऐसा जो विद्वान् है, वह संसार को सुख देने वाला होता है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका) 'वैसा ही आचरण करें' पर ध्यान दें।

एक विशेष गुण वेद मंत्र में कहा है कि शासक सबका मित्र हो। यहाँ मित्रता का अर्थ आजकल जो समझा जाता है कि अपने मित्रों को आप उपकृत करते रहिए, उनके प्रति पक्षपातपूर्ण व्यवहार करिए, ऐसा कुछ भी नहीं है। जैसा एक सच्चे मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्रों को सन्मार्ग पर चलाएँ और शासक के रूप में मित्र को उक्त उद्देश्य से अगर दण्ड भी देना पड़े तो तनिक भी ना हिचके, यह है सच्ची मित्रता। तो शासक के लिए डिग्री नहीं उक्त गुण आवश्यक है।

मित्रता का अर्थ यही है कि उसके जीवन की दिशा को एक प्रशस्त मार्ग दिखाएँ और ऐसी भावना राजा की समस्त प्रजा के लिए होनी चाहिए न कि केवल कुछ व्यक्तियों के लिए।

अब तनिक इतिहास पर भी दृष्टिपात करें। संसार में अथवा भारत में कितने ही ऐसे बड़े-बड़े पदों पर काम करने वाले हो हुए हैं जिनके पास औपचारिक शिक्षा की कोई डिग्री नहीं थी।

११ वर्ष तक भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री के रूप में काम करने वाले मौलाना अब्दुल कलाम मदरसों के अलावा कभी किसी विद्यालय में नहीं गए। उनकी आरम्भिक शिक्षा इस्लामी तौर तरीकों से हुई। घर पर या मस्जिद में। उन्हें उनके पिता तथा बाद में अन्य विद्वानों ने पढ़ाया। इस्लामी शिक्षा के अलावा उन्हें इतिहास तथा गणित की शिक्षा भी अन्य मौलानाओं से मिली। आजाद ने उर्दू, फारसी, हिन्दी, अरबी तथा अंग्रेजी भाषाएँ सीखीं। हालाँकि उन्होंने कभी किसी विद्यालय/विश्वविद्यालय में दाखिला नहीं लिया। तो स्वतंत्र भारत की शिक्षा की बागडोर उनके हाथ में सौंप दी गई। उन्हीं के समय में आईआईटी और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग जैसे संस्थानों की नींव रखी गई। इससे जो प्रमाणित होता है वह पाठकगण बखूबी समझ सकते हैं।

जहाँ तक मोदी जी की डिग्री का प्रश्न है उपलब्ध जानकारी के अनुसार प्रधानमंत्री मोदी को १९८३ में गुजरात विश्वविद्यालय से एमए की डिग्री मिली है। ग्रेजुएशन उन्होंने १९७८ में दिल्ली विश्वविद्यालय से किया है। हाई स्कूल की परीक्षा उन्होंने गुजरात बोर्ड से १९६७ में पास की थी। परन्तु जैसा हमने कहा कि डिग्री का विशेष महत्व नहीं है। हाँ! विद्वता आवश्यक है और वह वर्त्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी में नहीं है, ऐसा कहने वाला मूर्खों के संसार का ही सदस्य हो सकता है।

स्वामी दयानन्द जी के अनुसार

अन्त में शासक में महर्षि दयानन्द जी के अनुसार क्या गुण होने चाहिए जो उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में लिखा है वह प्रस्तुत हैं-

'राजा' उसी को कहते हैं जो शुभ गुण-कर्म-स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपातरहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्त्ते और उनको पुत्रवत् मान के उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न किया करे।

ऐसा होना चाहिए शासक। तब देशोन्नति सुनिश्चित है, इसमें सन्देह नहीं।

'यहाँ यह भी निवेदन कर दें कि वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छी नौकरी प्राप्त करना हो गया है जबकि महर्षि लिखते हैं '**शिक्षा**' जिस से विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें, उसको शिक्षा कहते हैं।

विचार करिए कि आज के विश्वविद्यालयों में जो शिक्षा दी जा रही है क्या उससे उक्त प्रकार के मनुष्य तैयार हो रहे हैं? उत्तर नकारात्मक है। अतः ऐसी शिक्षा की उपयोगिता पर विचार करना होगा, पर वह एक अलग बिन्दु है। इस लेख से पाठक यह न समझें कि हम औपचारिक शिक्षा पद्धति के समर्थक नहीं हैं। उसका अपना महत्व है, उसका अपना उपयोग है, इसलिए उसकी शरण लेना अत्यावश्यक बात है। बात केवल इतनी सी है विद्वता के लिए, निर्णय क्षमता के लिए, विशेष की जानकारी के लिए जो विवेक चाहिए वह केवल औपचारिक शिक्षा से प्राप्त होता है ऐसा हमारा मानना नहीं है। और प्रधानमंत्री जी की डिग्री को लेकर के जो हंगामा हुआ है वह तो केवल राजनीतिक नाटक मात्र है।

- अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

आजीवन सत्यार्थमित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बंधु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

पुनर्नवीनीकरण के झंझट से मुक्ति

शोक संवेदना

उपदेशक महाविद्यालय; टंकारा के पूर्व प्राचार्य वेद, संस्कृत एवं व्याकरण के प्रकाण्ड पंडित, अत्यन्त तपस्वी, बाल ब्रह्मचारी आचार्य विद्यादेव जी अब हमारे मध्य नहीं रहे। अनेकों गुरुकुलों मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित रहे। अत्यन्त सादगी पूर्ण जीवन जीते हुए आपने हजारों व्याकरणशास्त्र के विद्वान् राष्ट्र को समर्पित किए। महर्षि दयानन्द की विचारधारा को आपने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। ऐसे महामना को श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; उदयपुर एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से सश्रद्ध श्रद्धांजलि। - भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।

09314535379

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

स्वामी दयानन्द को सर्वदा इस बात का गर्व रहा कि उनका जन्म आर्यावर्त्त देश में हुआ किन्तु सत्याऽसत्य और मानव कल्याण की दृष्टि से उन्होंने किसी देश विशेष के साथ पक्षपात नहीं किया। स्वामी दयानन्द के अनुसार आर्यों से पूर्व इस देश में कोई मनुष्य बसता नहीं था। प्रथम मानवीय सृष्टि हिमालय की गोदी में हुई। आबादी बढ़ने के बाद वे मैदानी इलाकों में उतरे और वे सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों से सिंचित प्रदेशों में बस गये। इस देश का नाम 'आर्यावर्त्त' रखा। युगों तक वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति का बोलबाला रहा। महाभारत काल के बाद आर्यों के गौरव और उत्थान का पतन हो गया क्योंकि महाभारत का समय आर्यों के अत्यन्त अधःपतन का समय बन गया था।

महाभारत का युद्ध परस्पर की कलह, द्वेष और दुराग्रह का युग है। श्री कृष्णजी के सहयोग से भी यह युद्ध टल न सका। तब जो विनाश हुआ है उससे आज तक भारतवर्ष पनप नहीं पाया। वर्णाश्रम धर्म जो एकसूत्रता के लिए थे, विघटन का कारण बना। मंदिर बने, अवतार बने, पुजारी और महन्त बने, सम्प्रदाय बने, हम पतित और विघटित होते चले गए। विदेशियों के आक्रमणों ने देश को सभी प्रकार से खण्डित कर डाला। पिछले १००० वर्षों में बाहर से जो आक्रमणकारी आये वे पैगम्बर धर्म लेकर आये। देश में नई समस्यायें उत्पन्न हो गईं और आर्यावर्त्त देश हर बात में पिछड़ गया। सम्प्रदायवाद ने अनैतिकता की नींव डाली और देश के लोग

व्यापार में, धर्म-कर्म में और शासन में भी एक दूसरे को छलने और ठगने लग गए। स्वामी दयानन्द पुनर्जागरण युग के, आधुनिक भारतीय इतिहास के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने आर्यावर्त्त की इस दुर्गति को समझने का प्रयास किया और हमें राष्ट्रीयता का नया आलोक दिया।

नये युग के द्रष्टा

उन्नीसवीं शती के भारत की पूरी परिस्थिति को सामने रखा जाये तो एक ओर हिन्दू समाज की विशृंखलता और मूल्यों के क्षेत्र में व्यक्तिनिष्ठा का प्राधान्य था, तो दूसरी ओर इस्लाम कुछ शताब्दियों

तक विजेताओं और शासकों का धर्म रहने के कारण अपनी पराभूत अवस्था में भी हिन्दू समाज से अंग्रेजों की विदेशी शक्ति के विरुद्ध मिलने की मानसिकता नहीं रखता था। अंग्रेजों ने आगे इसका लाभ ही नहीं उठाया, वरन् इस अलगाव को गहरे विरोध में परिणत किया। ईसाई धर्म शासकों के संरक्षण में हिन्दू समाज की कमजोरियों का लाभ उठा रहा था। इस समय हिन्दू समाज निहित स्वार्थ के व्यक्तियों और वर्गों से हर तरह पीड़ित और शोषित था, अन्य धर्मों के सामने असुरक्षित भी। छूआ-छूत, वर्ण-व्यवस्था का अत्यन्त विकृत रूप, मन्दिरों, तीर्थों में पाखण्ड और ठगी, कुरीतियाँ आदि हिन्दू समाज में व्यापक रूप में छा गए थे। चारों ओर नैतिक मूल्यों की अवहेलना हो रही थी, समाज का मानवीय मूल्यों का आधार समाप्त हो चुका था। ऐसा मूल्य विहीन, विशृंखलित और विघटित हिन्दू समाज राजनीतिक तथा आर्थिक स्तर पर विदेशी शासक के सामने टिक नहीं सकता था, फलतः कमजोर होता गया। अंग्रेज हिन्दुओं के पाखण्ड और मुसलमानों की स्वार्थपरता का लाभ उठाकर अपनी शक्ति और प्रभाव को बढ़ाते गए।

स्वामी दयानन्द में भारतीय हिन्दू समाज की जड़ता और विकृतियों की पहचान सहज भाव से उत्पन्न हुई। शिवलिंग पर दौड़ते हुए चूहों से उस बालक के मन में जो कुछ घटित हुआ, वह साधारण नहीं था। भारतीय समाज के अन्दर सैंकड़ों वर्षों से जमती हुई जड़ता इस प्रकार उस द्रष्टा के मन में कौंध गई। फिर वह उस परिवेश से मुक्त होकर सत्य की खोज के लिए निकल पड़ा। उसके सामने दूसरा विकल्प नहीं था। वर्षों तक उसे सत्य के अनुसंधान के लिए भटकना पड़ा। नदी-नाले, घाट-दर्रे, पर्वत-शिखर चारों ओर भटकता रहा, पंडितों से शास्त्रों का अध्ययन किया, योगियों से उसने योग सीखा। पर उसके सामने एक ही लक्ष्य था- भारतीय हिन्दू समाज को इस अन्धकार से प्रकाश में किस प्रकार लाया जाए। कुरीतियों, कुसंस्कारों, जड़ताओं, अन्धविश्वासों से कैसे मुक्त किया जाए? यह लक्ष्य उनके सामने से कभी ओझल नहीं हुआ।

अन्ततः स्वामी विरजानन्द जी के पास उसने अध्ययन किया। गुरु-शिष्य ने एक दूसरे को पहचाना, जैसे दोनों को एक दूसरे की तलाश थी। शिष्य शास्त्रों के

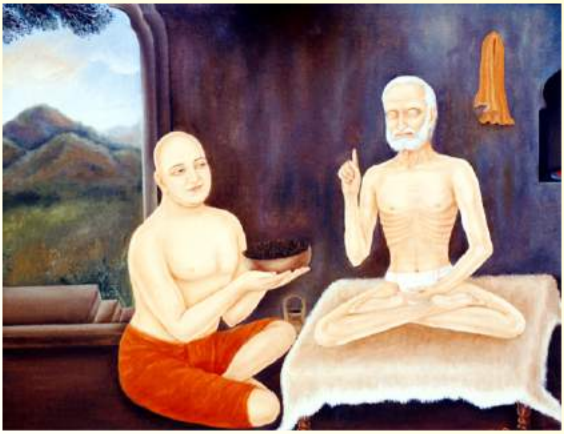

अध्ययन के बाद गुरु की दक्षिणा देने के लिए प्रस्तुत हुआ। गुरु ने दक्षिणा माँगी- जाओ सत्य का प्रचार करो और अन्धकार दूर कर अपने समाज की सेवा करो। शिष्य निकल पड़ा, उसने जीवनभर गुरु दक्षिणा चुकाई। स्वामी दयानन्द का व्यक्तित्व खण्डन-मण्डन प्रधान जान पड़ता है, क्योंकि ऐसा प्रक्षेपित किया गया है। पर यह सही नहीं है। अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुसंस्कार, स्वार्थपरता के अन्धकार को दूर करने के लिए यह मार्ग अपनाना अनिवार्य था। इसी प्रकार दूसरे धर्मों की जड़ताओं और अन्धविश्वासों को भी उजागर करना जरूरी था, तभी समाज का स्वस्थ और गतिशील निर्माण सम्भव हो सकता था।

धर्म और सम्प्रदाय की अवधारणा-

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की कल्पना की। यह उनकी सूक्ष्मदृष्टि का परिणाम है। उन्होंने इसे 'आर्य धर्म' नहीं कहा, पारम्परिक हिन्दू समाज से अलग होकर सम्प्रदाय तथा धर्म के नाम पर 'आर्य समाज' को चलाने की चेष्टा नहीं की। उनका उद्देश्य पूरे भारतीय समाज को एक सांस्कृतिक ऐतिहासिक

धार्मिक इकाई के रूप में परिभाषित और संगठित करने का था। साथ ही उनका प्रयत्न था कि यह समाज कुसंस्कारों से, जड़ताओं से, मिथ्या कर्मकाण्डों से मुक्त होकर शुद्ध मानवीय मूल्यों के आधार पर गतिशील हो। यहाँ स्वामीजी 'आर्य' शब्द को जाति अथवा धर्मवाचक न मानकर श्रेष्ठतावाची मानते हैं और उनके अनुसार जो भी श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का आचरण करता है, वह आर्य है- उन्होंने जाति, वर्ण, धर्म के परे ऐसे समाज की कल्पना की जो इन मूल्यों का जीवन बिताने के लिए प्रयत्नशील हो।

उन्होंने यह अनुभव किया होगा कि जब-जब समाज को मूल्योन्मुखी करने का प्रयत्न किसी विशेष संगठन के नाम पर किया जाता है तो आगे चलकर नामधारी धर्म या सम्प्रदाय प्रमुख हो जाता है और मूल्य गौण हो जाते हैं, यहाँ तक कि वे विकृत और भ्रष्ट हो जाते हैं। स्वामी जी ने इसी कारण अपने आन्दोलन को ऐसा नाम नहीं दिया। यही नहीं उन्होंने वैदिक धर्म की व्याख्या की, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं को स्थापित करने का प्रयत्न किया तब नाम देने का आग्रह नहीं किया। अपनी व्याख्या में उन्होंने पूरा प्रयत्न किया कि भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म के उन तत्त्वों को उजागर किया जाये जो व्यक्ति और समाज को ऊँचे मूल्यों के स्तर पर प्रतिष्ठित और विकसित करते हैं और ऐसे अंशों, पक्षों और तत्त्वों को अवैदिक अर्थात् जो श्रेष्ठ मूल्यों के विपरीत पड़ते हैं त्याग दिया जाए।

यह मूल दृष्टि साधारण व्यक्ति की नहीं है, सूक्ष्म दिव्य स्रष्टा की है, जो साधारण अर्थ में सही-गलत, पक्ष-विपक्ष, सम्प्रदाय और मत-मतान्तर को स्वीकार नहीं करता वरन् अपने समाज को मानवीय मूल्यों की उच्च स्तरीय भूमिकाओं की ओर प्रेरित करने की दृष्टि से केवल सत्य को ग्रहण करता है।

स्वामी दयानन्द ने वेद और उपनिषदों को स्वीकार किया। उपनिषदों में भी केवल प्राचीन उपनिषदों को। वेदों की प्राचीन व्याख्या-पद्धति अपनाई तथा पुराणों के बृहद् साहित्य को प्रमाण की दृष्टि से अस्वीकार कर दिया। धार्मिक और सामाजिक संस्कारों तथा कर्मकाण्डों से एक विशिष्ट वर्ग के रूप में स्वार्थी पुरोहितों को हटा दिया। समाज के द्वारा पूजा पाने वाले और मात्र आशीर्वाद देने वाले साधुओं, संन्यासियों को भी उन्होंने समाज में स्वीकृति नहीं दी, उन पर समाज की सेवा, शिक्षा और उनके उन्नयन का दायित्व रखा, अन्यथा अपने गृहस्थ आश्रम के कर्तव्य को निभाने के बाद व्यक्ति को वानप्रस्थ आश्रम में समाज की सेवा और शिक्षा का दायित्व निभाना अपेक्षित है। संन्यास आश्रम में आत्मोन्नयन के साथ व्यक्ति का अपने समाज को उच्चादर्शों की ओर प्रेरित करना कर्तव्य है। इन मान्यताओं के पीछे गहराई से देखने पर स्वामी जी के पूरे भारतीय समाज के इतिहास को समझकर भविष्य को देखने वाली सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त है। पुरोहित, गृहस्थ के समााजिक दायित्व और उच्चादर्शों का पथ-प्रदर्शक नहीं रह गया था, जो उसका दायित्व था। वह निहित स्वार्थ में लीन होकर एक वर्ग बन गया था। इसने सत्ता की प्रतिद्वन्द्वता में कुटिल दांव लगाये। समाज पर प्रभुत्व जमाने के लिए अनेक प्रकार के निरर्थक कर्मकाण्डों को जन्म दिया, नानाविध अन्धविश्वासों को प्रश्रय दिया। अतः स्वामी जी ने यज्ञ-विधान और संस्कार पद्धतियों के लिए सम्मानीय गृहस्थ को, स्त्री या पुरुष को अधिकार प्रदान किया और हर अवसर पर सम्मिलित रूप से कर्त्तव्यों और मूल्यों के स्मरण करने का विधान किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म (भारतीय धर्म के रूप में) और संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए अन्धविश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों, जड़ताओं पर प्रहार किया। साथ ही दूसरे धर्मों की इसी स्तर पर कड़ी आलोचना की, क्योंकि उनकी मान्यता थी कि धर्म भी कट्टर पन्थ, अंधविश्वासी और निहित स्वार्थियों के द्वारा नियंत्रित है। ध्यान देने की बात है,

वे धर्मों में सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे। उन्होंने अन्य धर्मावलम्बियों के नेताओं से इस सम्बन्ध की चर्चाएँ भी कीं। उनका दृष्टिकोण था कि अगर विभिन्न सम्प्रदाय मूल मानवीय धर्म को स्वीकार करके चलें तो वे कुसंस्कारों और जड़ताओं से मुक्त होकर मूल्यों पर प्रतिष्ठित रह सकते हैं और आपसी वैमनस्य से मुक्त हो सकते हैं। पर हर धर्म-सम्प्रदाय में निहित स्वार्थी वर्ग इतना प्रबल है कि वह स्वामी जी की दृष्टि को न समझ सकता था और न उनके विचारों को मान सकता था। फलतः अनेक सम्प्रदायों के धर्माचार्य स्वामी जी के सुझाव से सहमत न हो सके। स्वामी जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझने के लिए उनके इस पक्ष को दृष्टि में रखना आवश्यक है। उनके व्यक्तित्व की प्रेरणा के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रारम्भ से आर्य समाज को मानने वाले तमाम लोग रहे हैं। उनकी स्वयं की दृष्टि राष्ट्रीय रही है, देश को स्वाधीन करने के बारे में और देश के मूल्यों को स्तर पर उन्नत और संगठित करने के लक्ष्य से भी। स्वामी जी के अनुसार देश में सामाजिक जीवन को संगठित तथा उन्नत मूल्यों पर प्रतिष्ठित करना बहुत आवश्यक है, राष्ट्रीय स्वाधीनता उसके आधार पर प्राप्त करना न केवल आसान है वरन् उसे सुरक्षित रख देश को विकसित करना भी अधिक सरल है। **क्रमशः .....**

लेखक- डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें ''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

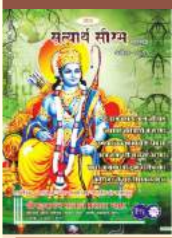

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

रोज करो तर्पण और श्राद्ध वह भी जीवित पितरों का

श्रीमती दुर्गा गोरमात

मैं एक दिन नवलखा महल के कार्यालय में कुछ पुस्तकें लेने गई थी तो मैंने वहाँ देखा कि न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य के समक्ष लगभग ६५ वर्षीय एक सज्जन विराजे हुए थे। बाद में पता चला वे उदयपुर के एक प्रभावशाली परिवार के सदस्य थे। वे अध्यक्ष जी से पितृदोष के बारे में बात कर रहे थे और काफी बेचैन थे। क्योंकि मैं पंच महायज्ञ वीथिका में प्रतिदिन दर्शकों को इस बारे में बताती हूँ, अतः मैं भी सुनने लग गई। अध्यक्ष जी ने उनको समझाया कि जिन कुण्डली इत्यादि के सन्दर्भ को लेकर के आप लोग पितृदोष समझते हैं वह वस्तुतः सही नहीं हैं और इस तथाकथित दोष के निवारण के जो उपाय उनके मरने के बाद बताए गए हैं उनका कोई औचित्य नहीं है। माता-पिता की जब वे जीवित हैं तभी इस प्रकार सेवा की जाय कि उनका रोम-रोम पुलकित हो जाय। ऐसा करने वाले को कभी भी पितृदोष नहीं लग सकता। चाहे कोई ग्रह कहीं बैठा हो। अब अगर आपके माता-पिता जीवित हैं तो बीती कुछ भी बातें हों उनको भुला कर के आप उनकी सेवा करें यही अपराध बोध से मुक्ति का उपाय है और अगर वे जीवित नहीं हैं और उनके जीवन काल में आपने उनके साथ कोई क्रूर व्यवहार किया हो तो उसका हल सिवाय पश्चाताप के और परिवारीजनों के समक्ष अपनी गलती को स्वीकारते हुए अब भविष्य के लिए परिवारीजनों को प्रेरित करें कि आपके आने वाले समय में आपसे या उनसे किसी भी प्रकार ऐसा कोई कार्य ना हो जिससे परिवार में बुजुर्गों को कष्ट होता हो। इतना सुनना था कि वे सज्जन फूट-फूटकर के रो पड़े और बोले कि मुझे सही बताया गया था, आप ही मुझे सही मार्गदर्शन करेंगे। अध्यक्ष जी ने कहा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का इस सन्दर्भ में भारतीय मनीषा से प्राप्त निर्देश है प्रत्येक घर में प्रतिदिन पितृयज्ञ किया जाए। पितृयज्ञ महायज्ञ है।

यह प्रसंग मेरे मन में चल ही रहा था कि ऐसे में कल के एक समाचार ने मुझे अन्दर तक झकझोर दिया। हरियाणा कैडर के ट्रेनी IAS विवेक आर्य के दादा-दादी ने सुसाइड नोट लिखने के बाद सल्फास की गोलियाँ खा लीं। अस्पताल में इलाज के दौरान दोनों की मौत हो गई। सुसाइड नोट में उन्होंने जिक्र किया था कि पोता आईएएस है और बेटे के पास करोड़ों की सम्पत्ति है। फिर भी मुझे और मेरी पत्नी को खाना तक नहीं मिलता है।

यह है पितृदोष का वास्तविक कारण। आश्चर्य की बात है यह एक आर्य समाजी परिवार था और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा निर्देशित पितृयज्ञ की

परम्परा इस परिवार के सदस्यों को ज्ञात होनी चाहिए थी, परन्तु आधुनिक भौतिकता के प्रभाव ने सम्भवतः सब कुछ भुला दिया।

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्या निर्देश हैं यह मैं आगे चर्चा करूँगी।

यहाँ मेरे मन में यही विचार आया कि सत्यार्थ सौरभ के पाठकों के समक्ष इस घटना की चर्चा करते हुए महर्षि प्रणीत पितृयज्ञ के बारे में कुछ निवेदन कर दूँ ताकि उसके महत्व को और उसके वास्तविक स्वरूप को लोग समझ सकें। यह भी निवेदन है कि इस सब को हम नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र; उदयपुर में प्रतिदिन पधारने वाले सैकड़ों व्यक्तियों को पंचमहायज्ञ वीथिका के माध्यम से समझाते हैं।

महर्षि दयानन्द जीवित पितरों के श्राद्ध और तर्पण की बात करते हैं। ऐसा न करने वाला पितृदोष का दोषी है।

परन्तु आप आज की प्रचलित धारणा को यदि देखें तो पितृदोष का कारण पितरों की अवहेलना नहीं वरन कुण्डली का दोष माना जाता है और उसके उपाय के भी ऐसे-ऐसे तरीके बताए जाते हैं जिनका तार्किक रूप से पितृदोष निवारण से कोई सम्बन्ध नहीं दिखता।

पितृदोष का कारण

अन्तरजाल पर उपलब्ध ऐसी कुछ सामग्री को यहाँ प्रस्तुत कर देना उचित समझती हूँ। वहाँ लिखा है-

कुण्डली का नवां घर धर्म का घर कहा जाता है, यह पिता का घर भी होता है, अगर किसी प्रकार से नवां घर खराब ग्रहों से ग्रसित होता है तो सूचित करता है कि पूर्वजों की इच्छायें अधूरी रह गयीं थी।

एक अन्य स्थल पर लिखा है- मृत्यु के बाद अगर विधि-विधान से अन्तिम संस्कार की प्रक्रिया न की जाए तो ऐसे में पितृदोष लगता है। माता-पिता का अनादर, मृत्यु के बाद परिजनों का पिण्डदान, तर्पण और श्राद्ध न करने पर पूरे परिवार पर पितृदोष लगता है।

कैसे पता चले कि जातक पितृदोष से ग्रसित है?

इसके लक्षण बताए गए हैं- पितृदोष होने पर वैवाहिक जीवन में सदा तनाव बना रहता है। पति-पत्नी के बीच आए दिन झगड़े होते हैं। परिवार में एकता नहीं होती। अक्सर घर में क्लेश होते हैं, मानसिक शान्ति नहीं मिलती, बिना बात के घर में लड़ाई होना पितृदोष के लक्षण हैं।

वंशवृद्धि न होना भी पितृदोष के कारण है। लाख जतन के बाद भी शादी के कई सालों तक सन्तान सुख नहीं मिल पाता। अगर सन्तान सुख मिल भी जाए तो बच्चा विकलांग होगा या पैदा होते ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

निवारण के उपाय

पितृदोष से मुक्ति के लिये उपाय यह बताया है कि सोमवती अमावस्या को (जिस अमावस्या को सोमवार हो) पास के पीपल के पेड़ के पास जाइये, उस पीपल के पेड़ को एक जनेऊ दीजिये और एक जनेऊ

भगवान विष्णु के नाम का उसी पीपल को दीजिये, पीपल के पेड़ की और भगवान विष्णु की प्रार्थना कीजिये, और एक सौ आठ परिक्रमा उस पीपल के पेड़ की कीजिये, हर परिक्रमा के बाद एक मिठाई पीपल को अर्पित कीजिये। परिक्रमा करते वक्त- 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करते जाइये। परिक्रमा पूरी करने के बाद फिर से पीपल के पेड़ और भगवान विष्णु के लिये प्रार्थना कीजिये और जो भी जाने अनजाने में अपराध हुये हैं उनके लिये क्षमा माँगिये। सोमवती अमावस्या की पूजा से बहुत जल्दी ही उत्तम फलों की प्राप्ति होने लगती है।

एक और उपाय

पितृपक्ष में रोजाना घर में शाम के समय दक्षिण दिशा में तेल का दीपक लगाएँ। ऐसा रोजाना भी कर सकते हैं। इससे पितृदोष खत्म हो जाता है।

अब आप स्वयं अपने विवेक का प्रयोग करते हुए समझ सकते हैं कि जीवित पितरों की सेवा सुश्रूषा ना करके उनके मरने के पश्चात् किसी भी प्रकार का कर्मकाण्ड उन्हें क्या सुख दे सकता है? अतः कर्तव्य ही है कि जिन पितरों ने हमें पाल-पोस कर, हमारी हर प्रकार की जरूरत के लिए अपनी इच्छाओं का बलिदान करके, यहाँ तक हमें पहुँचाया है हम प्रतिदिन उनकी सेवा सुश्रुषा करें।

मरने के बाद पाखण्डी लोगों के कहने से पितरों के निमित्त न जाने क्या-क्या दान करते हैं। क्या वह उन तक पहुँचता है? बिल्कुल नहीं।

सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने चारवाक का मत उल्लेखित किया है। चारवाक ने मरने के बाद पितरों तक सामग्री पहुँच जाती है उस पर प्रश्न उठाए थे। उसे मैं उद्धृत कर रही हूँ।

'जो पशु मार कर अग्नि में होम करने से पशु स्वर्ग को जाता है तो यजमान अपने पिता आदि को मार के स्वर्ग में क्यों नहीं भेजते। जो मरे हुए मनुष्यों की तृप्ति के लिये श्राद्ध और तर्पण होता है तो विदेश में जाने वाले मनुष्य को मार्ग का खर्च खाने-पीने के लिये बाँधना व्यर्थ है। क्योंकि जब मृतक को श्राद्ध, तर्पण से अन्न, जल पहुँचता है तो जीते हुए परदेश में रहने वाले वा मार्ग में चलनेहारों को घर में रसोई बनी हुई का पत्तल परोस, लोटा भर के उस के नाम पर रखने से क्यों नहीं पहुँचता? जो जीते हुए दूर देश अथवा दश हाथ पर दूर बैठे हुए को दिया हुआ नहीं पहुँचता तो मरे हुए के पास किसी प्रकार नहीं पहुँच सकता। सोचें इस तर्क का क्या उत्तर हो सकता है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में बच्चों में प्रारम्भ से ही ऐसे संस्कार डालने के उद्देश्य से लिखा है- 'अपने माता-पिता और आचार्य की तन-मन-धनादि उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीति पूर्वक सेवा किया करें।' ध्यान दीजिए यहाँ महर्षि दयानन्द ने प्रीतिपूर्वक शब्द का विशेष रूप से प्रयोग किया है क्योंकि कई बार ऐसा होता है कि जो धनाढ्य परिवार से होते हैं अथवा लोक लाज के कारण लोग माता-पिता की सेवा करते हैं उसमें प्रीति का अभाव होता है। अर्थात् नौकर लगा दिए, समय पर उनकी खानपान, दवा इत्यादि की व्यवस्था कर दी, परन्तु कभी उनके पास दो मिनट बैठ करके यह नहीं पूछा कि आप कैसे हैं, तो सच जानिए सारा सुख होते हुए भी माता-पिता को वह प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती जो होनी चाहिए। अतः प्रीतिपूर्वक सेवा करने का विशेष महत्व है। आपके पास चाहे धन ज्यादा है, चाहे धन कम है, इससे माता-पिता को कोई फर्क नहीं पड़ता परन्तु जितना जो कुछ है उसको उनके साथ साझा करते हुए जहाँ तक हो सके उनको उपलब्ध साधनों के साथ प्रेम और स्नेह आपसे मिले तो वे तृप्त हो जाते हैं। और यही वस्तुतः सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में पितृ यज्ञ के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द ने लिखा है-

'पितृयज्ञ' अर्थात् जिस में जो देव विद्वान्, ऋषि जो पढ़ने-पढ़ाने हारे, पितर माता-पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परमयोगियों की सेवा करनी। पितृयज्ञ के दो भेद हैं एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है **'श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्'** जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उस को श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय उसका नाम श्राद्ध है। और **'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितॄन तत्तर्पणम्'** जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें उस का नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितों के लिये है मृतकों के लिये नहीं।

अतः पितरों को प्रसन्न करने के लिए किसी विशेष १५ दिनों की प्रतीक्षा मत कीजिए। उनका रोज श्राद्ध कीजिए और रोज तर्पण कीजिए। आपको पितृदोष कभी नहीं लगेगा न आपको कभी अपराध बोध होगा।

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र
नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर

प्रचण्ड समर्पण-अखण्ड प्रवाह

२०० वर्ष पूर्व जन्मे महान् समाज सुधारक, स्वतंत्रता सैनानी ओर वेदों के विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वती के बारे में तो हम सब जानते ही हैं। अपनी प्रिय बहन और चाचा की असमय मृत्यु देखकर बचपन में ही उनमें वैराग्य पैदा हो गया और जन्म-मरण से मुक्ति पाने हेतु वे घर छोड़कर निकल गये। बरसों तक घने वनों, नदियों, पहाड़ों पर घूमने तथा अनेक गुरुओं से ज्ञान प्राप्त करने के बाद उन्हें मथुरा में गुरु विरजानन्द जी से मोक्ष का ज्ञान प्राप्त हो गया, परन्तु गुरु विरजानन्द जी ने तो गुरु दक्षिणा में जीवन ही माँग लिया। उन्होंने कहा, अगर मुझे गुरु दक्षिणा देना चाहते हो तो अपने कल्याण और मोक्ष के लिए जप-तप-ध्यान और समाधि के बजाय इस अज्ञान, अभाव, आडम्बर, परतंत्रता से पीड़ित दीन-दुःखी देशवासियों को दुःखों से आजादी दिलाने हेतु अपना जीवन लगा दो। स्वामी दयानन्द ने यही किया।

स्वामी दयानन्द जी जब अंग्रेज राज्य के राजपूताना के क्षेत्र में धर्म प्रचार के दौरान चित्तौड़ पहुँचे तो चित्तौड़ के किले को देखकर लौटते हुए उन्होंने अपने शिष्य आत्मानन्द से कहा कि आत्मानन्द इस शौर्य, त्याग-बलिदान की भूमि पर एक गुरुकुल स्थापित करना चाहिए, जहाँ पर बच्चों को शास्त्रों के अध्ययन के साथ-साथ समर्पण और राष्ट्र तथा धर्म के लिए बलिदान होने के संस्कार दिये जा सकें।

स्वामी दयानन्द के एक और शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जब अपनी जालंधर की हवेली और वकालात छोड़कर हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी चला रहे थे, वहाँ विद्या अध्ययन कर रहे एक विद्यार्थी ने अपने दादा गुरु दयानन्द की इस इच्छा को पूरा करने की मन में ठानी। मेरठ के पास अपने गाँव जाकर अपने पिताजी से कहा कि हम चार भाई हैं, आप जमीन जायदाद का बँटवारा कर मेरा हिस्सा मुझे दे दीजिए। पिताजी के कारण पूछने पर बता दिया कि मैं इसे बेचकर, स्वामी दयानन्द की इच्छा के अनुरूप चित्तौड़ में गुरुकुल स्थापित करूँगा। पिताजी और भाइयों ने हिस्सा दे दिया। हिस्से की जमीन के अतिरिक्त भी स्वर्ण, आभूषण, चाँदी और सिक्के दे दिए। इस पैसे से स्वामी व्रतानन्द जी ने चित्तौड़ आकर १९३० में नीलामी में १०० बीघा जमीन खरीदी और आवास, विद्यालय और यज्ञशाला के अतिरिक्त बच्चों के लिए गेहूँ उपजाने हेतु खेत भी खरीदे। स्वामी व्रतानन्द की विद्वता और व्रत को देखते हुए तत्कालीन चित्तौड़ कलेक्टर ने चित्तौड़ के धनिकों को कह

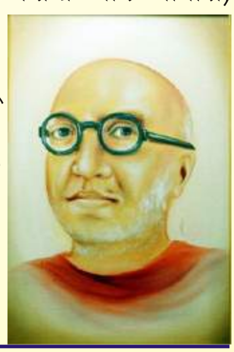

दिया कि कोई बोली नहीं बढ़ाएगा, स्वामी व्रतानन्दजी पवित्र कार्य हेतु जमीन खरीद रहे हैं। आज भी चित्तौड़ रेल्वे स्टेशन से लगा हुआ यह गुरुकुल सनातन आर्य संस्कृति का ध्वजवाहक बना हुआ है।

सन् १९४५ में इसी गुरुकुल में बिहार निवासी एक आर्य संन्यासी गुरुकुल एटा से स्वामी व्रतानन्द जी को सहयोग करने आए। गुरुकुल के कार्य से शेष बचे समय में ये स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी बैठकर बच्चों को पढ़ाते थे तथा उनके साथी सत्यनारायण वर्णी जी साँप, बिच्छु काटने और अन्य सामान्य रोगों की छुट-पुट दवा देते थे। एक बार मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह जी वहाँ से निकले तो उन्होंने पेड़ के नीचे कुछ ग्रामीणों तथा संन्यासी स्वतंत्रतानन्द और उनके सहयोगी वर्णी जी को देखकर पूछा कि ये क्या हो रहा है। गाँव वालों द्वारा जानकारी देने पर प्रसन्न होकर मेवाड़ महाराणा ने शिक्षा और स्वास्थ्य के इस सेवा कार्य को देखकर आसपास की ३-६९ हैक्टेयर जमीन दान में दे दी। स्वतंत्रतानन्द जी ने अलग से कोई समिति या ट्रस्ट नहीं बनाया था अतः जमीन का पट्टा व्रतानन्द जी के आर्य गुरुकुल के नाम से बना। यहाँ पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल श्री जीववर्धन शास्त्री और आचार्य डॉ. सोमदेव जी के मार्गदर्शन में अभी भी चल रहा है। देशभर से पढ़ने आई हुई बालिकाओं से जब वेदपाठ सुनते हैं तो मन प्रसन्न हो जाता है।

यहीं स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी प्रतिनिधि सभा के निर्देश से वैदिक धर्म के प्रचार हेतु १९४८ में प्रतापगढ़ के पास बमोत्तर गाँव में आ गये तथा जनजाति के बच्चों को पेड़ के नीचे बैठाकर पढ़ाने लगे। बाद में गाँव वालों ने दो कमरे भी बना दिए। अनकों बच्चे इसमें पढ़े, उनमें से एक नन्दलाल मीणा कई बार विधायक तथा दो तीन बार राजस्थान में कैबिनेट मंत्री रहे।

शंकरलाल व्यास अध्यापक जो बाद में शंकरानन्द वानप्रस्थी बने, के आग्रह पर स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी बांसवाड़ा आए तथा मामा बालेश्वर दयाल के बाद दूसरे समाज सुधारक के रूप में भील जनजाति के बालकों को गाँवों में एकल विद्यालय तथा शहर में छात्रावास खोलकर पढ़ाने लगे तथा धूम-घूमकर नशा तथा अन्य दुर्व्यसनों से दूर करते रहे। बाद में रातीतलाई में स्वामी जी ने दान में प्राप्त जगह पर तथा अपनी स्वतंत्रता सैनानी की पेंशन तथा जनसहयोग से 'दयानन्द सेवाश्रम' के नाम से

छात्रावास के विशाल भवन का निर्माण करवाया तथा यहाँ से स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी व शंकरानन्द जी भील बालकों को आधुनिक शिक्षा तथा अर्वाचीन भारतीय संस्कार देते रहे।

शंकरानन्द जी की मृत्यु तथा अपनी मृत्यु निकट देखकर स्वामीजी को आश्रम के भविष्य की चिन्ता सताने लगी। ऐसे समय में उड़ीसा के गुरुकुल आमसेना से एक ब्रह्मचारी जीववर्धन बांसवाड़ा अस्थाई रूप से आकर स्वामी के काम में मदद करने लगा। उस समय जीववर्धन शास्त्री 'उत्तीर्ण' करने के बाद महू (म.प्र.) से एम.ए. की परीक्षा दे रहे थे। परीक्षोपरान्त जब जीववर्धन जी बांसवाड़ा आए तो स्वामी जी ने पूछा कि स्थाई रूप से यहाँ रहकर मेरे बाद यह आश्रम सम्भालोगे क्या? शास्त्री जी के हाँ कहने पर स्वामी जी बोले कि यह इतना सरल नहीं है, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। शास्त्री हो, एम.ए. भी कर लिया, किसी कॉलेज, विश्वविद्यालय में नौकरी मिल जाएगी, गृहस्थी बसा लोगे, फिर आश्रम

के लिए समय कहाँ मिलेगा? इतना समय हो गया मुझे कोई युवा संन्यासी मिला नहीं, वानप्रस्थी जी के बाद आश्रम में स्थाई रूप से रहने वाला सहयोगी भी नहीं मिला। मृत्यु निकट होने से अब मैं इसे वी.एच.पी. के भारतमाता ट्रस्ट को दे देता हूँ। जीववर्धन जी ने कहा मैं इसे आजीवन सम्भालूँगा, बताइए आपको कैसे विश्वास दिलाऊँ। स्वामी जी ने कहा अपनी सारी डिग्रियाँ यहाँ लाकर जला दो, तो मैं मानूँगा कि नौकरी के लिए नहीं भागोगे। शास्त्री जी ने दसवीं से एम.ए. तक की डिग्रियाँ गुरु के चरणों में रखकर अग्नि को समर्पित कर दीं। वर्षों बीत गये, अब भी जीववर्धन जी शास्त्री यहीं रहकर भील जनजाति के बालकों को शिक्षा, स्वास्थ्य और संस्कार दे रहे हैं। चर्च के अलावा झारखण्ड से आए नक्सलवादियों द्वारा जनजातियों में फैलाये जा रहे विघटनकारी जहर का सफलतापूर्वक सामना कर रहे हैं।

इसके अलावा आप राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रदेश मंत्री तथा अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के मंत्री के रूप में नागालैण्ड सहित देश के अनेक क्षेत्रों में जनजातियों के मध्य शिक्षा, सेवा और राष्ट्रभक्ति की भावना का प्रचार-प्रसार आज तक कर रहे हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे चिरायु हों तथा स्वामी दयानन्द से चली आ रही सेवा और समर्पण की भागीरथी ऐसे ही अविरल बहती रहे।

- डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी
सेवानिवृत्त वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ
बांसवाड़ा (राज.), सम्पर्क सूत्र- ०८६१९६७२२७

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

मेरी वय ७० से अधिक है। ईश और भगवद् कृपा से जब तक मैं अपना परिचय न दूँ तो देखने वाले को उम्र न लगे ५० भी! शारीरिक और मानसिक ऊर्जा ४५ उम्र के नौजवान की है। नवलखा महल (सत्यार्थ प्रकाश) सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर में उदयपुर भ्रमण के दौरान परिवार सहित (बेटियों और दामादों के साथ) दिनांक २६ नवम्बर २०२२ को देखने गया था। ऋषि दयानन्द कृत और सम्पादित वैदिक वाड्ग्मय में मनुष्य जीवन के १६ संस्कारों की भव्य चित्र-दीर्घा ने सबसे अधिक मन मोह लिया। इसके अलावा ऋषि के जीवन-पर्यन्त कार्यों का इलेक्ट्रॉनिक प्रकाश-स्तम्भ घूमता हुआ श्रेष्ठ स्थापन, ऋषि ने जिस कक्ष में छह महीने बिताये और सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमर ग्रन्थ की रचना कर पूर्ण संशोधन के साथ द्वितीय संस्करण (एडिशन) छपवाया, वह मूर्धन्य कार्य ऋषि के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित करने का रसपान ही है। मैं भावनात्मक रूप से ये सब दर्शन करके अभिभूत हुआ। एक थियेटर भी ऋषि के जीवन को उजागर करते हुए निर्मित किया गया है, पूरी साज-सज्जा और बैठने की व्यवस्था के साथ। इससे ऋषि और उनके द्वारा सन् १८७५ में प्रथम स्थापित आर्य-समाज की कार्यशैली और उद्देश्यों को प्रभावी तरीके से चलचित्र के माध्यम से बताने में आसानी रहेगी। देश-विदेश से आये विजिटर्स, जिन्हें आर्य-समाज के बारे में और महर्षि के बारे में शायद भी कुछ पता नहीं होगा, उन्हें एक ही लघु बैठक में शानदार परिचय मिलेगा। उद्भट क्रान्तिकारियों के एक सौ से भी अधिक तस्वीरों का सजीव दिग्दर्शन, जिसमें भारत देश के स्वातन्त्र्य संग्राम की ज्वाला में ऋषि दयानन्द की कूद और समर्पित आहुति ने सन् १८७५ की प्रथम क्रान्ति में स्वराज्य स्थापित करने की जो अग्रिम भूमिका निभायी, का अवलोकन हृदय को छू लेता है। आदरणीय श्री अशोक आर्य; अध्यक्ष इस सांस्कृतिक केन्द्र के, ने इस महल का जीर्णोद्धार और भव्य साज-सज्जा के साथ जो नवीनीकरण किया, केन्द्र का समस्त कलेवर ही बदल डाला। इसमें उनकी योजना और टीम के परिश्रम/प्रशिक्षण की झलक स्पष्ट नजर आती है। कोई भी विजिटर एक ही दृष्टि में अन्दाजा लगा लेगा, ये सतही काम नहीं है बल्कि कितना दिमाग खपाया होगा! उदयपुर के तत्कालीन महाराजा स्वर्गीय महाराणा सज्जन सिंह जी की आत्मा को कितनी शान्ति प्राप्त होती होगी कि १० अगस्त १८८२ में जिस योगी दयानन्द को उन्होंने वहाँ आकर रहने का निमन्त्रण दिया, वह स्थली आज मूर्धन्य/धन्य हो उठी है। १४० वर्षों बाद सुगन्धित गुलाब की विशाल बगिया के माफिक इस अकाट्य उपलब्धि को अब आगे भी पोषित-पल्लवित करने का काम अध्यक्ष अशोक आर्य महोदय करते रहेंगे जिसमें और भी चार चाँद लगते रहेंगे। 'मैं भाग्यहीन २६ एवं २७ फरवरी, २०२३ के बहुत ही सुन्दर लोकार्पण समारोह में शामिल होने के लिये सब कुछ तैय्यारी के साथ शामिल होने के लिए उद्यत था, इस सबके बाद भी अचानक ऋतु परिवर्तन की ठण्डी-गरम वायु की अचानक चपेट में आ जाने से ऐन मौके पर यात्रा करने की असमर्थता होने से शामिल नहीं हो पाया और प्रत्यक्ष सौन्दर्य के दिग्दर्शन और आये हुए कई विद्वानों के (दर्शनों) से भी वंचित रहा। ऐसा दुर्भाग्य शायद ही मेरा इससे पहले कभी किसी प्रोग्राम के लिये हुआ हो?' तथापि २६ फरवरी, २०२३ को प्रातः १० बजे से अपरान्ह बाद २ बजे तक आर्य-सन्देश टीवी चैनल पर सारे लाइव प्रोग्राम का आनन्द उठाया और सभी विद्वानों के प्रवचन, उद्बोधन सुने। गुजरात के महामहिम राज्यपाल श्री देवव्रत आर्य महोदय का ४२ मिनिट्स का लैक्चर आर्य-समाज और आर्य-जगत में आई न्यूनताओं की तरफ इशारा करते हुए और भविष्य की योजनाओं से आर्य उत्कृष्टता को कैसे निर्मित करना है, मैं समझता हूँ, बेहद प्रेरक, गरिमामय, यादगार रहा। 'जो तो मेरी धर्म-पत्नी श्रीमती पुष्पलता बंसल की उम्र के इस नाजुक मोड़ पर जिम्मेदारी न हो तो सब-कुछ छोड़कर श्री अशोक आर्य जी के साथ स्थाई रूप से वहीं उदयपुर आकर प्रवास करते हुए जुड़ लूँ और उनका सहायक बनकर शेष जीवन भी ईश कृपा से वैदिक उत्थान के लिए संकल्पित कर लूँ, ऐसी तीव्र इच्छा है।' पुनः-पुनः सभी को बधाई!

- सुधीर कुमार बंसल (सत्यार्थ मित्र)
आर्य-समाज, सैक्टर-१५, फरीदाबाद (हरियाणा)

गंगा अशुद्ध हो गई है

गतांक से आगे ....

पूरे देश में सामान्यतः परन्तु बंगाल में विशेषतः सती दाह प्रथा का ताण्डव भयंकर रूप में छाया हुआ था। इससे मातृशक्ति अपमानित ही नहीं, विनाश के कगार पर खड़ी थी। यह १९वीं शती की घटना है। राजा राममोहन राय का हृदय चीत्कार कर उठा। तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम वैंटिक के समय में कोलकाता उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की गयी। इसका पौराणिक पण्डितों ने तीव्र विरोध किया व सती दाह प्रथा को वेदानुकूल घोषित करते हुए यह वेदमंत्र प्रस्तुत किया।

इमा नारीरविधवः सुपत्नीरांजनने सर्पिषा सं विशंतु।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे।।

– ऋग्वेद १०/१८/७

अर्थात् ये पति से युक्त स्त्रियाँ पतिव्रता बनकर घृतादि गन्धयुक्त पदार्थ से शोभित हो स्वगृह में प्रवेश करें। वे अश्रुरहित, रोगरहित, सुन्दररत्न एवं रम्य गुणों वाली सन्तानों को जन्म देने में समर्थ स्त्रियाँ आदर सहित पहले गृह में प्रवेश करें। (घर में आयें)

बंगाल के अज्ञानी व अन्धविश्वासी पण्डितों ने इस मंत्र को थोड़ा बदलकर न्यायालय में रखा। मन्त्र के नारीरविधवाः शब्द का पद बनता है– नारी अविधवाः। इसे बदलकर नारी विधवाः कर दिया। पदच्छेद के समय 'र' का 'अ' बनता है परन्तु उन्होंने 'र' को हटा ही दिया। आगे के अर्थ वही रखे। 'पतिव्रता, घृतादि सुगन्धित पदार्थ से शोभित व अश्रुरहित होकर।' मंत्र के अन्त में आए शब्द 'योनिमग्रे' का अर्थ है आदरपूर्वक गृह में प्रवेश करे। इसे भी परिवर्तित करके उन्होंने इसे 'योनिमग्ने' कर दिया जिसका अर्थ यह हो जाएगा– अग्नि में प्रवेश करे। राममोहन राय स्वयं तो वेदों के विद्वान् न थे। उन्होंने इधर-उधर सम्पर्क किया तो पता चला कि दक्षिण भारत में कुछ पण्डित हैं जो जटा पाठविधि से बोलकर इस मंत्र का शुद्ध रूप प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्हें बुलाया गया व उन्होंने इस मंत्र को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा– 'नारीरविधवाः' का पदच्छेद 'नारी अविधवाः' ही बनेगा एवं 'योनिमग्रे' ही मंत्र में है, 'योनिमग्ने' नहीं है। इस आधार पर याचिका स्वीकार की गई तथा सतीदाह कर्म पर प्रतिबन्ध लगाया गया। मिलावट पर विजय पाने की यह प्रेरक घटना है।

भवभूति नामक एक संस्कृत के कवि हुए हैं। उन्होंने उत्तर रामचरित नामक एक फसादी ग्रन्थ लिखा वह आज वाल्मीकि रामायण का भाग बनकर प्रचलित है। इसके अनुसार श्री राम ने राज्याभिषेक के पश्चात् सीता भगवती का परित्याग किया व शम्बूक नाम के एक शूद्र का वध किया। इसमें यह भी लिखा मिलता है कि तब ऋषियों के यहाँ मांसाहार का प्रयोग होता था। शम्बूक वध इसलिए किया क्योंकि कुछ ब्राह्मण राजा राम के पास जाकर बोले– 'तुम्हारे राज्य में एक शूद्र तपस्या का रहा है तथा उस तपस्या का दुष्परिणाम यह हो रहा है कि हमारे जीते हुए ही हमारे पुत्रों की मृत्यु हो रही है।' यह शिकायत सुनते ही राम ने वन में जाकर शम्बूक का वध कर दिया। आज के दलित नेता राम का नाम लेकर आर्यों को

कोसते हैं कि आर्यों ने हमारे पूर्वजों पर अत्याचार किए हैं। द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का अंगूठा माँगने का प्रमाण भी वे देते हैं। हमारा विनम्र निवेदन है कि पूर्वोक्त घटना का वर्णन वाल्मीकि ने किया, यह असत्य है। क्योंकि वाल्मीकि ने रामायण का लेखन राम के राज्याभिषेक तक ही किया। वहाँ तक ६ ही काण्ड हैं व 'उत्तर रामचरित' शीर्षक का शाब्दिक अर्थ ही यह है कि यह सातवां काण्ड बाद में मिलाया गया है। प्रक्षेप न मानने वालों से हमारा अनुरोध है कि वे वाल्मीकि द्वारा राम-राज्य का वर्णन करते हुए लिखे ६वें काण्ड के ये शब्द पढ़ें- **'न च स्म वृद्धा बालानां प्रेतकार्याणि कुर्वते'** अर्थात् राम राज्य में किसी वृद्ध ने किसी बालक का दाह नहीं किया अर्थात् बाल-मृत्यु नहीं होती थी। इस स्पष्ट घोषणा के बाद यदि भवभूति ने यह लिख दिया कि ब्राह्मणों के पुत्र शम्बूक की तपस्या से मरने लगे थे, तो इस पर कौन सत्याग्रही विश्वास करेगा? **क्रमशः ......**

- पंडित इन्द्रजित् देव

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

२. प्रकाशन की नियत अवधिः- मासिक

३. मुद्रक का नामः- अशोक कुमार आर्य
राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

४. प्रकाशक का नामः- अशोक कुमार आर्य
राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

५. सम्पादक का नामः- अशोक कुमार आर्य
राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः- ०७.०३.२०२३

प्रकाशक के हस्ताक्षर

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२३

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (त्रयोदश एवं चतुर्दश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	१	र	१	त १		२	२ ता	२	
	३	३ स	३	३	नों ३		४	नि ४	४
५	फि ५	५		६ म	६	या ६	६	क ६	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. कुरान में कही बातें सही नहीं इसलिए वो बातें क्या नहीं हो सकती?

२. महर्षि दयानन्द ने ईसाईयों के ईश्वर को सत्यार्थ प्रकाश में क्या कह कर सम्बोधित किया है?

३. सत्यार्थ प्रकाश का चौदहवाँ समुल्लास किसके मत के ऊपर आधारित है?

४. हमेशा विचार करके इष्ट का ग्रहण और किसका परित्याग करना चाहिए?

५. कुरान के अनुसार कुरान और पैगम्बर को नहीं मानने वाला क्या कहलाता है?

६. 'ये लोग तेरे विरुद्ध साक्षी देते हैं, इसका उत्तर दे' ये सवाल ईसा से किसने पूछा था?

''विस्तृत नियम पृष्ठ १५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जून २०२३

ग्रीष्म ऋतु (आहार-विहार एवं रोगनिवारण)

आयुर्वेद के अनुसार ज्येष्ठ व आषाढ मास (१६ मई से १५ जुलाई) का समय ग्रीष्म ऋतु का माना जाता है। इस ऋतु में भुवन भास्कर की किरणें तीव्र होती है। आदानकाल का अन्तिम समय होने के कारण सूर्य की विशेष प्रखरता होने से रुक्षता बढ़ जाती है। संसार के स्नेह व आद्रता आदि गुण न्यूनता को प्राप्त होते हैं। वायु का संचय होता है। कहा है- 'ग्रीष्मे संचीयते वायुः' अर्थात् ग्रीष्म ऋतु में वायु का संचय होता है।

इस ऋतु में रास्ता चलना त्याज्य है। गर्मी बढ़ जाने से मन्दाग्नि हो जाती है अर्थात् जठराग्नि क्षीण होने से भूख कम लगती है व गरिष्ठ भोजन नहीं पचता है। चन्द्रमा की किरणें विशेष लाभकारी, गुणकारी, वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध हुई हैं। हरियाली व प्रातः सायं खुली छत पर बैठना हितकर है। पार्क, बाग, बगीची में आनन्द की अनुभूति होती है। इस ऋतु में गर्मी बढ़ जाने के कारण आहार में पौष्टिक पदार्थ ठीक रूप से न मिलने व न पचने के कारण धातुपोषण भली प्रकार नहीं हो पाता है, इसलिए शीतल, स्निग्ध, खट्टे-मीठे व नमकीन पदार्थ लाभकारी हैं। घी, दूध, मक्खन युक्त मट्ठा, मसाला, आम, फालसा, नींबू, सत्तू, शीतल जल विशेष गुणकारी हैं। शीतल गृह में बैठना, सोना चाहिए। खस जवासे की टाटियाँ दरवाजे व खिड़कियों पर लगानी चाहिए। जिससे गर्म लू प्रवेश न कर सके। सफेद चन्दन का लेप मस्तिष्क पर करना चाहिए। गन्ने का रस, काला नमक व नींबू का रस हितकर है। खादी के हल्के वस्त्र धारण करने चाहिए। उदर के लिए पेय पदार्थ विशेष लाभकारी हैं। दही तथा दूध की लस्सी पीनी चाहिए। पेप्सी, कोका कोला आदि कोल्ड ड्रिंक्स कैमिकल युक्त व हानिकारक होने के कारण नहीं पीने चाहिए। अधिक भोजन करना इस ऋतु में निषिद्ध है। इस मौसम में स्नायु मण्डल बहुत कमजोर रहता है अतः मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि मादक द्रव्यों का प्रभाव सीधे स्नायु मण्डल पर पड़ता है। स्त्री प्रसंग से बचने की कोशिश करें अन्यथा इससे शारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार की निर्बलता

बढ़ती है।

इस ऋतु में अधिकांश लू लगना, हैजा, मसूरिका, अतिसार आदि रोग होने की सम्भावना रहती है। गर्मी में आँखों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अधिकतर इन्हीं दिनों में आँख आया करती हैं। कम से कम दो बार स्नान करना चाहिए। सायंकाल स्नान करने से शान्त व प्रगाढ़ निद्रा आती है। इस ऋतु में दिन में १-२ घंटे सोया जा सकता है। दिन में ११ से ४-५ बजे तक गर्म हवा से बचना चाहिए। यदि बाहर जाना पड़े तो सिर पर सूती कपड़ा व छाता लेकर जावें। मानव से लेकर पशु-पक्षी पर्यन्त सभी प्राणी ग्रीष्म से अत्यन्त व्याकुल होने के कारण शीतल पदार्थों की कामना करते हैं। अतएव आहार विहार में ऐसी सावधानी अवश्य रखनी चाहिए जिससे शरीर के सोम अंश (कफ) की पूर्ति होती रहे। और वायु भी अधिक संचित न होने पाये। इस ऋतु में जलीय, तरल, शीतल तथा स्निग्ध द्रव का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है। भोजन कम खाना व गरिष्ठ भोजन, तले हुए, ज्यादा तैल वाले व अजीर्ण करने वाले पदार्थ नहीं खावें। प्याज, पोदीना, इमली, आम का पना विशेष हितकर हैं।

सेवनीय औषधियाँ -

ग्रीष्म ऋतु में त्रिफला चूर्ण, घृत व दुग्ध के साथ लेवें। द्राक्षावलेह, फलासव, पाचनसुधा, ब्राह्म रसायन, मुक्ता पिष्टी, प्रवाल पिष्टी, एलादि मंथ आदि का प्रयोग लाभप्रद है। प्याज, पुदीना भी विशेष गुणकारी हैं। आम का पना पीने से अंशुधात (लू लगना) रोग नष्ट होता है। कागजी नींबू के सेवन से कब्ज दूर रहती है। दोपहर के भोजन में चावल दाल, कढी, दही, मट्ठा का सेवन अवश्य करना चाहिए। क्योंकि विशेषकर इसी ऋतु के लिए **'भोजनान्ते पिबेत् तत्क्रम्'** कहा है। बर्फ नहीं खानी चाहिए। बर्फ से पाचन शक्ति क्षीण होती है। हरड़ का चूर्ण कपड़छन करके, दुगनी मात्रा में एक साल पुराना गुड़ मिलाकर १-१ ग्राम की गोली बना लेवें। १० दिन तक २-२ गोली उबले हुए हल्के गर्म पानी से सुबह, दोपहर व सायं लेवें। इससे सभी वातरोग, पेट फूलना, कब्ज, सूखी खांसी, लू लगना, हैजा, मौसमी बुखार, भूख न लगना आदि रोग ठीक होते हैं।

यज्ञ चिकित्सा-

ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ-आषाढ) में, मुरा (तालपर्णी व मुरामांसी), बायविडंग, कपूर, चिरौंजी, नागरमोथा, पीला चन्दन, छरीला (भूरी छरीला), निर्मलीफल, सतावर, खस, गिलोय, धूप सरल (एक सुगन्धयुक्त काष्ठ पंजाब से प्राप्य), दालचीनी, लवंग, गुलाब के फूल की पत्तियाँ, चन्दन, तगर, लुंबर, सुपारी, तालीस पत्र, पट्माख, दारूहल्दी, लाल चन्दन, मंजीठ, शिलारस, केसर, जटामांसी, नेत्रबाला, बड़ी इलायची, उन्नाव, आंवला, खाण्ड का बूरा, घृत आदि से ग्रीष्म ऋतु में यज्ञ करने से भयंकर रोगों से बच सकते हैं।

वेदों में यज्ञ न करने वाले मनुष्यों को पापी बताया है, क्योंकि मनुष्य प्रतिदिन, मल-मूत्र, पसीना कफ आदि द्वारा वातावरण को दूषित करता रहता है, जिससे अनेकों प्रकार के वायरस व बैक्टीरिया उत्पन्न होते रहते हैं। इनसे अनेकों प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न होने से प्राणियों को कष्ट भोगना पड़ता है। ऋतु अनुकूल औषधियों व गोघृत द्वारा यज्ञ करने से मनुष्य स्वयं के मलों द्वारा की गई पर्यावरण दुर्गंधि का निराकरण कर पाप का भागी होने से बच जाता है। प्राचीन वैदिककाल में आर्यों द्वारा यज्ञ करने के कारण वर्तमान युग की भाँति (कोरोना- फ्लू, हैजा, बर्ड फ्लू आदि) महामारियों का इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं है।

- डॉ. वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी
राजस्थान सरकार

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

सूर्यदेव अस्ताचल की ओर चल पड़े थे, पक्षियों ने भी अपने-अपने घर जाने की तैयारी कर ली थी, और यह नवयुवक इस प्रकार तेज-तेज कदम रखते हुए आगे बढ़े जा रहा था जैसे उसे भी अपनी मंजिल तक पहुँचने की शीघ्रता थी। गौर वर्ण ६ फिट की लम्बाई, चौड़ा सीना, लावण्य ऐसा कि जो देख ले वह देखता ही रह जाए। शरीर पर बहुमूल्य वस्त्र एवं आभूषण। अगर कोई इस युवक के बारे में अनुमान लगाना चाहे तो आसानी से समझ सकता था कि यह युवक किसी समृद्ध परिवार का सदस्य है।

उसकी चाल को देखकर एक अनुमान यह भी लगाया जा सकता था कि वह किसी जगह से शीघ्राति शीघ्र दूर जाना चाहता था और बात यही ठीक थी। यह तरुण मूलशंकर हैं जो अपने भरे पूरे ऐश्वर्य से परिपूर्ण परिवार को त्याग कर, समस्त मोह-माया के बन्धनों को तोड़कर, शीघ्र से शीघ्र उस घर से दूर चला जाना चाहता था जहाँ उसे बंधन में बाँधने के लिए, उसके विवाह की तैयारियाँ धूमधाम से हो रही थीं।

मूलशंकर के मस्तिष्क में विचारों के भँवर घूम रहे थे। माँ का चेहरा आज न जाने क्यों सर्वाधिक याद आ रहा था। बचपन से लेकर के अब तक माँ ने जिस प्रकार से उसको बड़ा किया, अत्यन्त लाड़ और जतन से पाला, पिताजी के गुस्से से हर बार बचाया और जिसकी ममतामयी आँखें हर समय उसी को देखना चाहती थीं, आज वह उसी माँ को छोड़कर दूर जा रहा है। पिता कठोर अवश्य थे परन्तु जो उनके संस्कार थे उन संस्कारों में ही वे मूल जी को दीक्षित करना चाहते थे, पिता की यह अभिलाषा अनुचित तो नहीं थी। परन्तु मूल जी को पार्थिव पूजा ढकोसला लगने लगी। शिवरात्रि की वह घटना चलचित्र की तरह उनके मस्तिष्क में चल रही थी जिसका अवसान पार्थिव पूजा को सदैव के लिए त्याग देने से हुआ। वह चाचा जो मूल को अपने कंधे पर बिठाकर के सारे गाँव का चक्कर लगा करके आते थे उनकी और उससे पहले हुयी उनकी बहन की मृत्यु भी उनको स्मरण हो रही थी। एक बात विशेष थी कि यह सब उनके दिमाग में चल अवश्य रहा था, परन्तु गृहत्याग का उनका निश्चय उतना ही दृढ़ होता जा रहा था, जबकि सामान्य परिस्थितियों में, एक सामान्य व्यक्ति को पुनः मोह के बन्धन अपनी ओर खींच लेते हैं।

मूल जी की विचार शृंखला को अचानक एक तेज आवाज ने भंग कर दिया। 'कहाँ जा रहा है बालक, किस परिवार का बालक है, क्या तेरा उद्देश्य है? हमें सब बता। सामने देखा ३ साधु वेशधारी प्रौढ़ खड़े हुए थे। इन्होंने अपना विचार उनके सामने व्यक्त किया कि मुझे वैराग्य हो गया है, गृहत्याग कर रहा हूँ। वे लोग वस्तुतः कोई साधु नहीं थे, ठग थे, जो साधु के वेश में घूमते रहते थे। उन्होंने सोचा यह अवसर अच्छा है। वे बोले कि वैराग्य की बात करता है और तेरे शरीर पर इतने आभूषण, कीमती वस्त्र पहने हुए हैं। इन सबको त्याग दे। वैराग्य के पथ में इनका क्या काम? इधर कहना था उधर मूल जी ने अपने समस्त आभूषण उतार करके उनको दे दिए, और आगे बढ़ चले। कुबेर के खजाने जैसे ऐश्वर्य को ठोकर मारकर आने वाले को

भला उन आभूषणों का क्या मोह?

मूल जी को अकस्मात् ध्यान आया कि अगर कोई परिचित मिल गया तो वह जाकर के पिता को बता देगा। अतः उन्होंने प्रचलित मार्ग को छोड़ करके पगडंडियों को पकड़ लिया और लगभग ६ कोस दूर रात व्यतीत की, सुबह तड़के ही वे पुनः निकल पड़े और इस बात का ध्यान रखते रहे, कि मार्ग में कोई मिल ना जाए।

मूल जी को एक ही कष्ट हो रहा था कि उनके वियोग में माँ का क्या हाल हो रहा होगा? परन्तु जब जीवन का लक्ष्य निर्धारित हो गया तो फिर ऐसे विचारों पर नियंत्रण पाना ही पड़ता है, क्योंकि वह लक्ष्य सामान्य सांसारिक जीवन में प्राप्त नहीं हो सकता।

यह तो मूल जी की वैचारिक स्थिति थी, उधर घर में हाहाकार मचा हुआ था। पिता समृद्ध जमींदार थे। उनके पास अनेक सिपाही थे। मूल जी की खोज में उन्होंने सारा इलाका छान मारने का निश्चय किया। उधर मूल जी को भी किसी से पता चला कि उसके पिता क्या पुरुषार्थ कर रहे हैं तो वे और सतर्क हो गए।

चलते-चलते मूल जी सायला पहुँचे, जहाँ एक ब्रह्मचारी के सुझाव पर उन्होंने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धारण किया और कषाय वस्त्र धारण कर लिए। हाथ में एक तुम्बा लिया और अपना नाम शुद्ध चैतन्य रखा और योगाभ्यास करते रहे।

उन दिनों भी धर्म के नाम पर नाना प्रकार के अनर्थ होते थे। उनकी मुलाकात ऐसे ठगों से भी हुई जिन्होंने एक रानी को अपने फंदे में फंसा रखा था। पर मूल जी इस सब से बचते हुए कोट कांगड़ा से होते हुए सिद्धपुर के मेले की ओर चल पड़े। रास्ते में एक परिचित वैरागी मिल गया तो इतने दिनों से जो कठोरता के आवरण में मृदु भाव छुपे हुए थे वह फूट पड़े और मूल जी की आँखों से आँसू गिरने लगे। उस व्यक्ति को उन्होंने बता दिया कि उन्होंने घर छोड़ दिया है और वे सिद्धपुर की ओर जा रहे हैं।

सिद्धपुर पहुँचकर मूलजी सच्चे योगियों की तलाश में कुटिया-कुटिया भटकते रहे। उधर पिता को उनकी

वर्तमान स्थिति का जब पता चला तो वह कुछ सिपाहियों को लेकर के सिद्धपुर पहुँच गए और अंततः उन्होंने मूल जी को पकड़ लिया। पिता ने उन पर बहुत क्रोध किया परन्तु मूल जी ने अन्दर से दृढ़ निश्चय होते हुए भी ऊपर से पिताजी के चरण पकड़ लिए कि मैं आपके साथ घर चलूँगा। जब वापस जा रहे थे तो एक रात को पहरेदारों को सोता हुआ देखकर के वहाँ से निकल भागे और एक बरगद के पेड़ पर जाकर छुप गए। यह पिता पुत्र का अन्तिम मिलन था। इसके पश्चात् कभी यह अवसर उनके जीवन में नहीं आया।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; उदयपुर एवं प्रसिद्ध सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के चिन्तनशील एवं विद्वान् सम्पादक तथा कई सारे पुस्तकों के लेखक एवं सम्पादक जिन्होंने अपने अकल्पनीय चिन्तन से महर्षि दयानन्द के कर्मस्थली नवलखा महल को, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित कर सम्पूर्ण विश्व में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त कराया है ऐसे महामना श्री अशोक आर्य जी को डीएवी कॉलेज प्रबन्ध समिति; दिल्ली द्वारा डीएवी; उदयपुर के चेयरमैन एवं डीएवी सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल; दरीबा माईन्स, राजसमन्द तथा डीएवी सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल; जावर माईन्स, उदयपुर के वाईस चेयरमैन के पद पर सुशोभित करने पर हम सभी को गर्व की अनुभूति हो रही है। इस अवसर पर न्यास के सभी पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता एवं उदयपुर के समस्त आर्य समाज एवं आर्य सज्जन अपनी ओर से श्री आर्य जी को हृदय के अन्तःस्थल से शुभकामना सम्प्रेषित करते हैं।

- उदयपुर के समस्त आर्य

समाचार

विज्ञान भवन नई दिल्ली में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की २००वीं जन्म जयन्ती पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी के द्वारा स्मारक डाक टिकट का विमोचन हुआ। विशिष्ट अतिथि

श्री देवुसिंह चौहान जी (केन्द्रीय संचार राजमंत्री), स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी (परमार्थ निकेतन; ऋषिकेश), स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी (सांसद; सीकर राजस्थान), अध्यक्षता कर रहे स्वामी रामदेव जी (पतंजलि योगपीठ; हरिद्वार) ने महर्षि दयानन्द के कार्यों की सराहना करते हुए वेद मार्ग पर चलने का सन्देश दिया। सत्य फाउण्डेशन के मुख्य संरक्षक एवं लोकप्रिय सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी को सफल कार्यक्रम की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई। इस अवसर पर देश के कोने-कोने से अनेक संन्यासी, विद्वान्, आर्यनेतागण उपस्थित थे।

ऋषि ने जलाई है दिव्य ज्योति, जहाँ में सदा यूँ ही जलती रहेगी,
हजारों और लाखों को रस्ता मिलेगा, करोड़ों के जीवन बदलती रहेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की २००वीं जयन्ती के आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

२१ मार्च २०२३, तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली। मानव कल्याण, राष्ट्र निर्माण, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण के पथ पर आर्य समाज निरन्तर उन्नति, प्रगति और

सफलता के विभिन्न आयामों के साथ अग्रसर है। जैसा कि यह सर्वविदित ही है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शुक्ल चैत्र प्रतिपदा, १० अप्रैल, सन् १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की थी और आज जब भारत देश आजादी के ७५ वर्ष पूरे होने पर अमृत महोत्सव मना रहा है तो इस क्रम में आजादी से ७५ वर्ष पूर्व स्थापित आर्य समाज अपनी स्थापना के १५० वर्षों की पूर्णता की ओर आगे बढ़ रहा है। आर्य समाज के १४८वें स्थापना दिवस की पूर्व सन्ध्या पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा; दिल्ली राज्य के संयुक्त तत्वावधान में विशेष आयोजन २१ मार्च २०२३ को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में अपनी अपार सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी का उद्बोधन विशेष रूप से प्रेरणा का आधार बना और गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत की अध्यक्षता में पूरा कार्यक्रम ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। इस अवसर पर श्री अमित शाह जी ने आर्य समाज की यज्ञ वेदी पर विराजमान होकर अपने कर कमलों से आहुति दीं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के महान् व्यक्तित्व, आर्य समाज के सेवा कार्य और महर्षि के उपकारों को स्मरण करते हुए उन्होंने आर्य समाज को आगे बढ़ाने का यह विशेष अवसर बताया और नई ऊर्जा के साथ आर्य समाज आगे बढ़े, यह आह्वान भी किया।

इस अवसर पर श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी; प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य देवव्रत जी; महामहिम राज्यपाल, गुजरात, श्री अमित शाह जी; गृहमंत्री भारत सरकार एवं श्री सुरेन्द्र रैली जी; प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा ने विशेष उद्बोधन दिये।

श्री अमित शाह जी और आचार्य देवव्रत जी का मंच पर अभिनन्दन करने वाले आर्य नेताओं में श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री पूनम सूरी जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, आचार्य देवव्रत जी, श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी, श्री योगेश मुंजाल जी, डॉ. अशोक कुमार चौहान जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री विकास आर्य जी इत्यादि महानुभाव प्रमुख थे। सर्वश्री गंगा प्रसाद जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, प्रकाश आर्य जी, राधकृष्ण आर्य जी, सतीश चड्ढा जी, विद्यामित्र ठुकराल जी, राकेश ग्रोवर जी, विकास आर्य जी चेन्नई इत्यादि महानुभाव मंच पर उपस्थित थे।

– विनय आर्य; महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आचार्या सुकामा पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत

आचार्या सुकामा को उनके द्वारा वैदिक शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाने हेतु महामहिम राष्ट्रपति के द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत किया गया। आचार्या सुकामा वर्तमान में रोहतक

के रुड़की गाँव में विश्ववारा कन्या गुरुकुल की प्राचार्या हैं तथा गुरुकुल चोटीपुरा की भी प्राचार्या रह चुकी हैं। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से आचार्या जी को ढ़ेरों बधाईयाँ।

– अशोक आर्य, सम्पादक-सत्यार्थ सौरभ

हलचल

समूचे आर्य जगत् के लिए गौरव की बात

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक एवं अद्भुत वाग्मी डॉ. रामप्रकाश जी (कुरुक्षेत्र) को सेन्टर फॉर स्टडीज इन सिविलाइजेशंस के अध्यक्ष के तौर पर चुन लिया गया है। डॉ. रामप्रकाश जी Centre for Studies in Civilizations नामक संस्थान के बोर्ड पर वर्षों से थे और उन्होंने इस संस्थान से २०१६ में Arya Samaj and the Vedic World view नामक बड़े आकार के ७४८ पृष्ठ वाला एक बृहद् ग्रन्थ प्रकाशित किया था, जिसे उन्होंने एवं उनके सुपुत्र जितेन्द्र जी रामप्रकाश ने सम्पादित किया था। उनसे पहले संस्थापक अध्यक्ष श्री डी.पी. चट्टोपाध्याय जी थे।

इस संस्थान से एक फिलॉसफी का जर्नल निकलता है- Sandhan, जिसका एक अंक स्वामी दयानन्द और वेदों से सम्बन्धित दार्शनिक मुद्दों पर निकालने का विचार है।

CSC ने पिछले तीन दशकों में भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं दर्शन के विभिन्न पक्षों पर लगभग १३० शोधपरक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। डॉ. रामप्रकाश जी को बहुत-बहुत बधाई।

प्रतिभा विकास संस्थान के चमत्कारिक लोकोपयोगी कार्य

सार्वदेशिक आर्य समाज द्वारा संचालित प्रतिभा विकास संस्थान में रहकर तैयारी करने वाले विकास गुप्ता जी के upsc में psc परीक्षा २०२३ में ४६वीं रैंक लाकर सफल होने पर न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

न्यास के मंत्री श्री भवानी दास जी आर्य के निवास पर दिनांक २ अप्रैल

२०२३ से ६ अप्रैल २०२३ तक वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर जी (ग्वालियर) के ब्रह्मत्व में बड़े श्रद्धोपेत वातावरण में अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य जी ने अथर्ववेद के अनेक मंत्रों की व्याख्या करते हुए अथर्ववेद के स्वरूप को स्पष्ट किया। परिवार के सभी सदस्य और आगंतुक गण समय-समय पर यज्ञ में विराजे और आहुतियाँ प्रदान कीं। ६ अप्रैल को दोपहर में पूर्णाहुति के पश्चात् सहभोज का भी आयोजन था। इस श्रेष्ठ आयोजन के लिए आर्य परिवार को बधाई और साधुवाद।

- भँवर लाल गर्ग-कार्यालय मंत्री

जवाहर पाल के सुपुत्र का वायु यातायात नियंत्रक में चयन

अत्यन्त प्रसन्नता की बात हैं कि इस न्यास के अतीव सहयोगी एवं इस न्यास के लिए तन-मन-धन से हमेशा समर्पित रहने वाले आदरणीय

श्री जवाहर लाल जी पाल के बड़े सुपुत्र श्री पुरुषोत्तम लाल पाल का नागर विमानन अनुसंधान सगंठन के अन्तर्गत भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण में वायु यातायात नियंत्रक के लिए चयनित होने पर उदयपुर के सम्पूर्ण आर्य समाजियों को गर्व की अनुभूति हो रही है। श्री पुरुषोत्तम लाल पाल प्रारम्भ से ही अपने पिता के बताये सुमार्ग पर चलते हुए शिक्षा के क्षेत्र में कई सारी उपलब्धियों को अर्जित करते हुए आज उच्च पदस्थ हुए हैं। इन्होंने उदयपुर में भी शिक्षा का विस्तार करने के लिए स्वयं के स्तर पर एक कोचिंग सेन्टर प्रारम्भ किया था, जिसमें पढ़ने वाले विद्यार्थी भी अपने क्षेत्र में ऊँचाई के सोपानों को स्पर्श कर रहे हैं। पाल परिवार को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ देते हुए पुरुषोत्तम पाल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

- नारायण मित्तल; कोषाध्यक्ष-न्यास

असम के महामहिम राज्यपाल श्रद्धेय गुलाब चन्द कटारिया जी ने किया नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन

बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि अपने अत्यन्त व्यस्ततम कार्यक्रम में से भी समय निकाल कर के महामहिम राज्यपाल असम राज्य, श्रद्धेय

गुलाब चन्द जी कटारिया साहब नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के अवलोकन हेतु अन्य विशिष्ट गणमान्यजनों सहित पधारे। मुझ अशोक आर्य द्वारा सभी परिदृश्यों का वर्णन किया गया।

श्रद्धेय भाई साहब ने सम्पूर्ण परियोजना का अवलोकन कर इसके प्रचार-प्रसार को अत्यन्त आवश्यक बताते हुए परामर्श दिया कि जो जो भी सम्भव साधन हैं यथा होर्डिंग्स, ब्रोशर और भी अन्य सामग्री, उस के माध्यम से NMCC का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए, ताकि अधिकाधिक लोग वैदिक संस्कृति और भारतीय मनीषा का साक्षात् करने और उनके मूलभूत तत्वों को समझने यहाँ आएँ और लाभ प्राप्त करें। यहाँ यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि सम्पूर्ण परियोजना का शुभारम्भ आपके ही सहयोग राशि से प्रारम्भ हुआ था और धीरे-धीरे अन्य भामाशाहों के उदार सहयोग से यह अद्भुत अनूठी परियोजना सम्पूर्ण हुई है।

- डॉ. अमृतलाल तापड़िया; संयुक्तमंत्री-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०९-१०/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०९/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई, उदयपुर (राज.), श्री फूलचन्द यादव; गाजियाबाद (उ.प्र.), श्री नन्दलाल जी आर्य, बेतिया, बिहार, श्री गोपाल राव, सतखण्डा, निम्बाहेड़ा (राज.)।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १०/२२ के चयनित विजेताओं में उपरोक्त ०९/२२ के सभी विजेता शामिल हैं केवल एक श्रीमती कमल कान्ता सहगल; पंचकूला (हरियाणा) १०/२२ में अन्य चयनित विजेता हैं एवं ०९/२२ के विजेता श्री गोपाल राव; सतखण्ड़ा, निम्बाहेड़ा (राज.) १०/२२ में चयनित नहीं हैं। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 15 पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

वेद मनुष्यमात्र के लिए

परमेश्वर के नित्य होने से उसके ज्ञानादि गुण भी नित्य हैं। जो नित्य पदार्थ हैं उनके गुण कर्म, स्वभाव नित्य और अनित्य द्रव्य के अनित्य होते हैं।' (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास)। वेद प्रलय के साथ नष्ट नहीं होते। वे नित्य परमात्मा के ज्ञान में सदैव रहते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में पुनः उनका प्रकटीकरण मात्र होता है।

केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है

ऋक्, यजु, साम और अथर्व मंत्र संहिताओं का नाम ही वेद है, यही ईश्वर प्रदत्त हैं। पश्चात् ऋषियों ने मनुष्यमात्र को समझाने हेतु ब्राह्मणादि ग्रन्थों की रचना की। वे ईश्वरीय अथवा अपौरुषेय नहीं हैं। अनेक आचार्य वेद के साथ ब्राह्मणों को भी अपौरुषेय मानते हैं परन्तु ऋषि दयानन्द ब्राह्मणों को ईश्वर प्रदत्त न मान, ऋषिकृत मानते हैं। स्वकृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में इस विषय पर ऋषि ने विस्तार से प्रकाश डाला है। सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि लिखते हैं-

इत्यपि निगमो भवति। इति ब्राह्मणम्॥

- नि.अ.५/ख.३/२

छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि॥ (अष्टा.४/२/६६)

यह पाणिनीय सूत्र है- 'इससे भी स्पष्ट विदित होता है कि वेद मंत्रभाग और ब्राह्मण व्याख्या भाग हैं। क्योंकि जो मानें तो वेद सनातन कभी न हो सके, क्योंकि ब्राह्मण पुस्तकों में बहुत से ऋषि-महर्षि और राजादि के इतिहास लिखे हैं और इतिहास जिसका हो

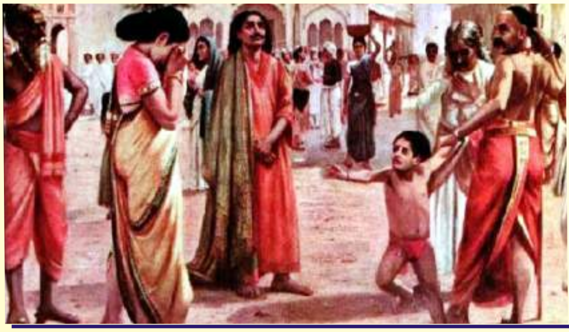

उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। यह ग्रन्थ भी उसके जन्मे पश्चात् होता है। वेदों में किसी का इतिहास नहीं, किन्तु विशेष जिस-जिस शब्द से विद्या का बोध होवे उस-उस शब्द का प्रयोग किया है। किसी मनुष्य की संज्ञा वा विशेष कथा का प्रसंग वेदों में नहीं।'

'स्पष्टतः इतिहास न होने की कसौटी' पर ब्राह्मण ग्रन्थ खरे न उतरने के कारण अपौरुषेय नहीं कहे जा सकते।

वेद मनुष्यमात्र के लिए हैं

महर्षि दयानन्द का मानव जाति पर सबसे बड़ा उपकार है कि उन्होंने वेद पढ़ने का अधिकार मानव मात्र के लिए स्वीकार किया। इसके लिए अथक प्रयास किये।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च॥ - यजुर्वेद २६/२

मैं इस कल्याणी वाणी (वेद) को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सुसंस्कृत, असंस्कृत सभी मनुष्यों के लिए बोलता हूँ।

उनका मानना था कि जब वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है तो उसके किसी भी पुत्र और पुत्री को इससे वंचित नहीं किया जा सकता।

वेद के अनन्य भक्त ऋषि दयानन्द लिखते हैं-

'जैसा माता-पिता अपने सन्तानों पर कृपादृष्टि कर उन्नति चाहते हैं वैसे ही परमात्मा ने सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है। जिससे मनुष्य अविद्यान्धकार, भ्रमजाल से छूटकर विद्या विज्ञान रूप सूर्य को प्राप्त होकर अत्यानन्द में रहें और विद्या तथा सुखों की वृद्धि करते जायँ।' (सत्यार्थ प्रकाश-सप्तम समुल्लास)

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 May-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

जो वेद को स्वर और पाठमात्र को पढ़के अर्थ नहीं जानता, वह जैसा वृक्ष डाली, पत्ते, फल, फूल और अन्य पशु धान्य आदि का भार उठाता है, वैसे भारवाह अर्थात् भार का उठाने वाला है और जो वेद को पढ़ता और उन का यथावत् अर्थ जानता है, वही सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त होके देहान्त के पश्चात् ज्ञान से पापों को छोड़, पवित्र धर्माचरण के प्रताप से सर्वानन्द को प्राप्त होता है।।

सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास पृष्ठ ६९

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर